हिंदी (ऐच्छिक) कोड सं. 002

पाठ्यक्रम कक्षा- बारहवीं

2009

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
(क)	**अपठित बोध** (गद्यांश और काव्यांश बोध) (15+5)	20
(ख)	**रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन**	25
(ग)	**अंतरा** (भाग-2) : काव्य-भाग	20
	गद्य-भाग	20
	अंतराल (भाग-2)	15
	अधिकतम अंक	**100**
	(क) **अपठित बोध : (गद्यांश और काव्यांश बोध)**	**20**
1.	**गद्यांश बोध** : गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक, आदि पर लघूत्तरात्मक प्रश्न	15
2.	**काव्यांश बोध** : काव्यांश पर आधारित पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न	5
	(ख) **रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन : सृजनात्मक लेखन से संबंधित दो प्रश्न**	**25**
3.	निबंध	10
4.	कार्यालयी-पत्र	05
5.	**''अभिव्यक्ति और माध्यम'' के आधार पर व्यावहारिक लेखन पर दो प्रश्न** (5+5)	10
	पाठ्य पुस्तक (20+20)	**40**
	काव्य-भाग :	**20**
6.	सप्रसंग व्याख्या (दो में से एक)	8
7.	कविता के कथ्य पर दो प्रश्न (3+3)	6
8.	कविताओं के काव्य-सौंदर्य पर दो प्रश्न (3+3)	6

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	गद्य-भाग :	**20**
9.	सप्रसंग व्याख्या (दो में से एक)	8
10.	पाठों की विषय-वस्तु पर तीन में से दो प्रश्न (3+3)	6
11.	किसी एक कवि/लेखक का साहित्यिक परिचय	6
	पूरक पुस्तक :	**15**
12.	विषयवस्तु पर आधारित (चार में से तीन लघुत्तरात्मक प्रश्न)	9
13.	विषयवस्तु पर आधारित एक निबंधात्मक प्रश्न	6
	निर्धारित पुस्तकें	
	अतरा, अंतराल (भाग-दो) दो : अभिव्यक्ति और माध्यम - एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।	
	पाठ्यक्रम-2009 में विशिष्ट परिवर्तन के.मा. शिक्षा बोर्ड/शैक्षणिक/परिपत्र/2008 दिनांक 22.05.2008, परिपत्र संख्या-21/08	
	टिप्पणी :	
	खंड-ख	
	व्यावहारिक लेखन पर दो प्रश्नों के प्रकार निम्नलिखित हैं :	
	• एक निबंधात्मक प्रश्न विकल्प सहित	5
	• पाँच लघुत्तरात्मक प्रश्न	5
	खड-ग (गद्य भाग)	
	• सप्रसंग व्याख्या दों में से एक	6
	• कवि परिचय एवं लेखक परिचय में विकल्प दिया जाएगा।	6
	• गद्यापाठों पर आधारित तीन में से दो विचारात्मक प्रश्न	8

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्रश्न पत्र प्रारूप-1

हिंदी ऐच्छिक

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्नों के प्रकार	अपठित बोध	लेखन	साहित्य	विशेष टिप्पणी
अति लघुत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश बोध 1(1) काव्यांश बोध 5(5)	अभिव्यक्ति और माध्यम 5(5)		पठन, अवबोध व लेखन कौशल
लघुत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश बोध 14(7)		कविताओं के अर्धबोध पर प्रश्न 6(2) काव्यांशों का काव्य सौंदर्य 6(2) पूरक पुस्तक के पाठों की विषय वस्तु पर प्रश्न 9(3)	अवबोध व लेखन कौशल पठन, लेखन, व अवबोधन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल
निबंधात्मक प्रश्न		पत्र लेखन 5(1) निबंध लेखन 10(1) अभिव्यक्ति और माध्यम 5(1)	काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या 8(1) गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या 6(1) गद्यांश पाठों की विषय वस्तु पर प्रश्न 8(2) कवि लेखन जीवन परिचय 6(1) पूरक पुस्तक के पाठों की विषयवस्तु प्रश्न 6(1)	अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल

नोट : प्रश्न संख्या कोष्ठक के भीतर और अंक कोष्ठक के बाहर है।

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

हिंदी ऐच्छिक

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र-1

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खण्ड 'क'	20
1.	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	15
	जो समाज को जीवन दे, उसे निर्जीव कैसे माना जा सकता है? तालाबों में, जलस्रोत में जीवन माना गया और समाज ने उनके चारों ओर अपने जीवन को रचा। जिसके साथ जितना निकट का संबंध, जितना स्नेह, मन उसके उतने ही नाम रख लेता है। देश के अलग-अलग राज्यों में, भाषाओं में, बोलियों में तालाब के कई नाम हैं। बोलियों के कोश में, अनेक व्याकरण के ग्रंथों में, पर्यायवाची शब्दों की सूची में तालाब के नामों का एक भरा-पूरा परिवार देखने को मिलता है। डिंगल भाषा के व्याकरण का एक ग्रंथ हमीर नाम-माला तालाबों के पर्यायवाची नाम तो गिनता ही है, साथ ही उनके स्वभाव का भी वर्णन करते हुए, तालाबों को धरम सुभाव कहता है।	
	गड़ा हुआ धन सबको नहीं मिलता। लेकिन सबको तालाब से जोड़कर देखने के लिए भी समाज में कुछ मान्यताएँ रही हैं। अमावस और पूनो, इन दो दिनों को कारज यानी अच्छे और वह भी सार्वजनिक कामों का दिन माना गया है। इन दोनों दिनों में निजी काम से हटने और सार्वजनिक कामों से जुड़ने का विधान रहा है। किसान अमावस और पूनो को अपने खेत में काम नहीं करते थे। उस समय का उपयोग वे अपने क्षेत्र के तालाब आदि की देखरेख व मरम्मत में लगाते थे। समाज में श्रम भी पूँजी है और उस पूँजी को निजी हित के साथ सार्वजनिक हित में भी लगाते थे। श्रम के साथ-साथ पूँजी का अलग से प्रबंध किया जाता रहा है। इस पूँजी की जरूरत प्रायः ठंड के बाद, तालाब में पानी उतर जाने पर पड़ती है।	
	जब गरमी का मौसम सामने खड़ा होता है और यही सबसे अच्छा समय है, तालाब की किसी बड़ी टूट-फूट पर ध्यान देने का। वर्ष की बारह पूर्णिमाओं में से ग्यारह पूर्णिमाओं को श्रमदान के लिए रखा जाता रहा है पर पूस मास की पूनों पर तालाब के लिए धान या पैसा एकत्र किए जाने की परंपरा रही है।	
	सार्वजनिक तालाबों में तो सबका श्रम और पूँजी लगती ही थी, निहायत निजी किस्म के तालाबों में भी सार्वजनिक स्पर्श आवश्यक माना जाता रहा है। तालाब बनने के बाद उस इलाके के सभी सार्वजनिक स्थलों से थोड़ी-थोड़ी मिट्टी लाकर तालाब में डालने का चलन आज भी मिलता है।	
	तालाबों में प्राण है। प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव बड़ी धूमधाम से होता था। कहीं-कहीं तालाबों का पूरी	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	विधि के साथ विवाह भी होता था। छत्तीसगढ़ से यह प्रथा आज भी जारी है। विवाह से पहले तालाब का उपयोग नहीं हो सकता। न तो उससे पानी निकालेंगे और न उसे पार करेंगे। विवाह में क्षेत्र के सभी लोग, सारा गाँव पाल पर उमड़ आता है। आसपास के मंदिरों में मिट्टी लाई जाती है, गंगा जल आता है और इसी के साथ अन्य पाँच या सात कुओं या तालाबों का जल मिलाकर विवाह पूरा होता है। इन तालाबों के दीर्घ जीवन का एक ही रहस्य था – ममत्व। यह मेरा है, हमारा है। ऐसी मान्यता के बाद रखरखाव जैसे शब्द छोटे लगने लगेंगे। घरमेल यानी सब घरों के मेल से तालाब का काम होता था। सबका मेल तीर्थ है। जो तीर्थ न जा सके, वे अपने यहाँ तालाब बना कर ही पुण्य ले सकते हैं। तालाब बनाने वाला पुण्यात्मा है, महात्मा है। जो तालाब बचाए, उसकी भी उतनी ही मान्यता मानी गई है। इस तरह तालाब एक तीर्थ है। यहाँ मेले लगते हैं। और इन मेलों में जुटने वाला समाज तालाब को अपनी आँखों में, मन में बसा लेता है। तालाब समाज के मन में रहा है। और कहीं-कहीं तो उसके तन में भी। बहुत से बनवासी समाज गुदने में तालाब, बावड़ी भी गुदवाते हैं। गुदनों के चिह्नों में पशु, पक्षी, फल आदि के साथ-साथ सहरिया समाज में सीता बावड़ी और साधारण बावड़ी के चिह्न भी प्रचलित हैं। सहरिया शबरी को अपना पूर्वज मानते हैं। सीताजी से विशेष संबंध है। इसलिए सहरिया अपनी पिडंलियों पर सीता बावड़ी बहुत चाव से गुदवाते हैं। जिसके मन में, तन में तालाब रहा हो, वह तालाब को केवल पानी के एक गड्ढे की तरह नहीं देख सकेगा। उसके लिए तालाब एक जीवंत परंपरा है, परिवार है और उसके कई संबंध, संबंधी हैं। तालाब का लबालब भर जाना भी एक बड़ा उत्सव बन जाता है। समाज के लिए इससे बड़ा और कौनसा प्रंसग होगा कि तालाब की अपरा चल निकलती है। भुज (कच्छ) के सबसे बड़े तालाब हमीरसर के घाट में बनी हाथी की एक मूर्ति अपना चलने की सूचक है। जब जब इस मूर्ति को छू लेता तो पूरे शहर में खबर फैल जाती थी। शहर तालाब के घाटों पर आ जाता। कम पानी का इलाका इस घटना को एक त्यौहार में बदल देता। भुज के राजा घाट पर आते और पूरे शहर की उपस्थिति में तालाब की पूजा करते और पूरे भरे तालाब का आशीर्वाद लेकर लौटते। तालाब का पूरा भर जाना, सिर्फ एक घटना नहीं, आनंद है, मंगल सूचक है, उत्सव है, महोत्सव है। वह प्रजा और राजा को घाट तक ले आता था। कोई भी तालाब अकेला नहीं है। वह भरे-पूरे जल परिवार का एक सदस्य है। उसमें सबका पानी है और उसका पानी सबमें है – ऐसी मान्यता रखने वालों ने एक तालाब सचमुच ऐसे ही बना दिया था। जगन्नाथपुरी के मंदिर के पास बिंदुसागर में देश भर के हर जल स्रोत का नदियों और समुद्रों तक का पानी मिला है। दूर-दूर से, अलग-अलग दिशाओं से पुरी आने वाले भक्त अपने साथ अपने क्षेत्र का थोड़ा सा पानी ले आते हैं और उसे बिंदुसागर में अर्पित कर देते हैं।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	देश की एकता की परीक्षा की इस घड़ी में बिंदुसागर राष्ट्रीय एकता का सागर कहला सकता है। बिंदुसागर जुड़े भारत का प्रतीक है।	
क)	उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।	1
ख)	अमावस्या और पूर्णिमा के संबंध में लोगों की क्या मान्यता है?किसान इन दिनों में क्या करते हैं?	2
ग)	तालाब को तीर्थ क्यों माना गया है?	2
घ)	तन-मन के साथ तालाब से जुड़े व्यक्ति के लिए तालाब पानी का गड्ढा मात्र क्यों नहीं है?	2
ङ)	''तालाब का पूरा भर जाना सिर्फ एक घटना नहीं, महोत्सव है।'' कैसे?	2
च)	''कोई भी तालाब अकेला नहीं है'' - इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।	2
घ)	लेखक ने बिंदुसागर को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक क्यों माना है?	2
ज)	तालाब के विवाह की विधि किस प्रकार पूरी की जाती है?इस विवाह का क्या महत्त्व है?	2
2.	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	**5**
	चंचल पग दीपशिखा के घर गृह, मग, वन में आया वसंत! सुलगा फाल्गुन का सूनापन सौंदर्य शिखाओं में अनंत! सौरभ की शीतल ज्वाला से फैला उर-उर में मधुर दाह आया वसंत, भर पृथ्वी पर स्वर्गिक सुंदरता का प्रवाह! पल्लव-पल्लव में नवल रुधिर पत्रों में मांसल रंग खिला, आया नीली-पीली लौ से पुष्पों के चित्रित दीप जला! अधरों की लाली से चुपके कोमल गुलाब के गाल लजा	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	आया, पंखुड़ियों को काले पीले धब्बों से सहज सजा! कलि के पलकों में मिलन स्वप्न अलि के अंतर में प्रणय गान लेकर आया, प्रेमी वसंत आकुल जड़ चेतन स्नेह प्राण! काली कोकिल! सुलगा उर से स्वरमयी वेदना का अंगार, आया वसंत, घोषित दिगंत करती, भर पावक की पुकार!	
क)	इस कविता में किस ऋतु का वर्णन है?यह कहाँ-कहाँ दिखाई दे रहा है?	1
ख)	'सुलगा फागुन का सूनापन' - आशय स्पष्ट कीजिए।	1
ग)	इस ऋतु ने फूल-पत्तों के स्वरूप में क्या-क्या परिवर्तन ला दिया है?	1
घ)	प्रेमी के रूप में वसंत क्या कर रहा है?	1
ङ)	इस कविता में प्रकृति-चित्रण की कौन-सी विशेषता आपको आकर्षित करती है?	1
	अथवा	
	हे ग्राम-देवता! नमस्कार सोने-चाँदी से नहीं किन्तु तुमने मिट्‌टी से किया प्यार! हे ग्राम-देवता! नमस्कार! जन कोलाहल से दूर कहीं एकाकी सिमटा-सा निवास, रवि-शशि का उतना नहीं कि जितना प्राणों का होता प्रकाश, श्रम वैभव के बल पर करते हो	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	जड़ में चेतन का विकास, दानों-दानों से फूट रहे सौ-सौ दानों के हरे हास, यह है न पसीने की धारा, यह गंगा की है धवल धार, हे ग्राम-देवता! नमस्कार! अधखुले अंग जिनमें केवल, हैं कसे हुए कुछ अस्थि-खंड जिनमें दधीचि की हड्डी है यह वज्र इंद्र का है प्रचंड! जो है गतिशील सभी ऋतु में गर्मी-वर्षा हो या कि ठंड जग को देते हो पुरस्कार देकर अपने को कठिन दंड! झोंपड़ी झुकाकर तुम अपनी ऊँचे करते हो राज-द्वार! हे ग्राम-देवता! नमस्कार! तुम जन-मन के अधिनायक हो तुम हँसो कि फूले-फले देश आओ, सिंहासन पर बैठो यह राज्य तुम्हारा है अशेष! उर्वरा भूमि के नये खेत के नये धान्य से सजे वेश, तुम भू पर रहकर भूमि-भार धारण करतो हो मनुज-शेष	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	अपनी कविता से आज तुम्हारी विमल आरती लूँ उतार! हे ग्राम देवता! नमस्कार!	
क)	कवि किसको नमस्कार करता है? क्यों?	1
ख)	यह ग्राम देवता क्या-क्या करता है?	1
ग)	"यह गंगा की है धवल धार," कवि किसे गंगा की धवल धार कहता है और क्यों?	1
घ)	कवि ग्राम देवता को किस रूप में, कहाँ बिठाना चाहता है?	1
ङ)	यह ग्राम देवता कौन है? कवि उसके प्रति मन में क्या भाव रखता है?	1
	खण्ड ख	**25**
3.	**निम्नलिखित विषयो में से किसी एक पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लिखिए** क) कक्षा का अविस्मरणीय दिन ख) प्रगति है देश की तभी, जब साक्षर होंगे हम सभी ग) दिल्ली मैट्रो : मेरी मैट्रो	**10**
4.	**कल्पना कीजिए कि आपने कंप्यूटर इंजीनियर का अध्ययन पूरा कर लिया है और विप्रो कंपनी के निदेशक को कंप्यूटर-इंजीनियर के पद के लिए आवेदन भेजना चाहते हैं। अपना स्ववृत्त तैयार करते हुए आवेदन पत्र लिखिए।** **अथवा** **दूरदर्शन के प्रसारित कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए दूरदर्शन के निदेशक को पत्र लिखिए और अपने सुझाव भी लिखिए।**	**5**
5.	**"टेलीविजन जन संचार का सबसे लोकप्रिय और सशक्त साधन है। टेलीविजन पर कोई भी सूचना कितने सोपानों को पार कर दर्शकों तक पहुँचती है? स्पष्ट कीजिए।** **अथवा** **विशेष लेखन किस शैली में लिखा जाता है? इस लेखन में किन-किन बातों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है?**	**5**

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
6.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए -**	**5**
	क) भारत में नियमित अपडेटेड साइटों के नाम बताइए।	
	ख) विशेष रिपोर्ट के कोई दो प्रकार बताइए।	
	ग) भारत में समाचार-पत्रकारिता का प्रारंभ कब एवं किससे हुआ?	
	घ) भारत में प्रथम छापाखाना कब और कहाँ खुला था?	
	ङ) किन्हीं दो समाचार-पत्रों के नाम बताइए जिनके वेब संस्करण इंटरनेट पर प्राप्त हैं?	
	खण्ड ग	**55**
7.	**निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**	**8**
	तोड़ो तोड़ो तोड़ो ये पत्थर ये चट्टानें ये झूठे बंधन टूटें तो धरती को हम जानें सुनते हैं मिट्टी में रस है जिससे उगती दूब है अपने मन के मैदानों पर व्यापी कैसी ऊब है आधे आधे गाने तोड़ो तोड़ो तोड़ो ये ऊसर बंजर तोड़ो ये चरती परती तोड़ो सब खेत बनाकर छोड़ो मिट्टी में रस होगा ही जब वह पासेगी बीज को हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को? गोड़ो गोड़ो गोड़ो	
	अथवा	
	राघौ! एक बार फिरि आवौ। ए बर बाजि त्रिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावौ।।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	जे पवय प्याइ पोखि कर-पंकज वार वार चुचुकारे। क्यों जीवहिं, मेरे राम लाडिले! ते अब निपट बिसारे।। भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारेक। तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिम मारे।। सुनहु पथिक! जो राम मिलहिं बन कहियो मातु संदेसो। तुलसी मोहिं और सबहिन तें इन्हको बड़ो अंदेसो।।	
8.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए:** (3+3)	6
	क) 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए यह बताइए कि उसे कवि ने स्नेहभरा, गर्वभरा और मदमाता क्यों कहा है?	
	ख) सत्य की पहचान हम कैसे करें? 'सत्य' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।	
	ग) 'वसंत आया' कविता में कवि की चिंता क्या है? इस कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।	
9.	**निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए** (3+3)	6
	क) पिय सौं कहेहु सँदेसरा ऐ भँवरा ऐ काग। सो धनि बिरहें जरि गई तेहिक धुआँ हम लाग।	
	ख) हेम कुंभ ले उषा सवेरे भरती ढुलकाती सुख मेरे। मदिर ऊँघते रहते जब जगकर रजनी भर तारा।	
	ग) भर गया है जहर से संसार जैसे हार खाकर देखते हैं लोग लोगों को सही परिचय न पाकर, बुझ गई है लौ पृथा की जल उठो फिर सींचने को।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
10.	**निम्नलिखित गद्यांश की सप्रंसग व्याख्या कीजिए -** कुछ दिनों के बाद मैने सुना कि शेर अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद का बड़ा जबरदस्त समर्थक है इसलिए जंगली जानवरों का शिकार नहीं करता। मैं सोचने लगा, शायद शेर के पेट में वे सारी चीजें हैं जिनके लिए लोग वहाँ जाते हैं और मैं भी एक दिन शेर के पास गया। शेर आँखें बंद किए पड़ा था और उसका स्टाफ आफिस का काम निपटा रहा था। मैंने वहाँ पूछा, "क्या यह सच है कि शेर साहब के पेट के अंदर, रोजगार का दफ्तर है?" अथवा यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो संसार को बदलने की बात न उठती। कवि का काम यथार्थ जीवन को प्रतिबिंबित करना ही होता तो वह प्रजापति का दर्जा न पाता। वास्तव में प्रजापति ने जो समाज बनाया है, उससे असंतुष्ट होकर नया समाज बनाना कवि का जन्मसिद्ध अधिकार है। यूनानी विद्वानों के बारे में कहा जाता है कि वे कला को जीवन की नकल समझते थे और अफलातून ने असार संसार को असल की नकल बताकर कला को नकल की नकल कहा था। लेकिन अरस्तू ने ट्रेजेडी के लिए जब कहा था कि उसमें मनुष्य जैसे हैं उससे बढ़कर दिखाए जाते हैं, तब नकल-नवीस कला का खंडन हो गया था।	6
11.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए** (4+4) क) 'कच्चा चिट्ठा खोलना' मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि 'कच्चा चिट्ठा' पाठ में लेखक ने अपने जीवन का कच्चा चिट्ठा कैसे खोला है? ख) औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे?' जहाँ कोई वापसी नहीं' - पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। ग) 'कुटज' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि 'सुख और दुख तो मन के विकल्प हैं।'	8
12.	**केदारनाथ सिंह अथवा तुलसीदास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।** अथवा **रामंचद्र शुक्ल अथवा पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।**	6
13.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 'अन्तराल भाग-2' के आधार पर दीजिए-** (3+3+3) क) "चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता?" इस कथन के आधार पर सूरदास की मन:स्थिति का वर्णन कीजिए।	9

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	ख) रूप सिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भी भूप सिंह के सामने बौना कैसे पड़ गया था? 'आरोहण' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	ग) 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी देते हैं,' कैसे? 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	घ) 'अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसे गिरा करता था।' उसके क्या कारण हैं?' अपना मालवा-खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में' - पाठ के आधार पर बताइए।	
14.	**'अपना मालवा - खाऊ - उजाड़ू सभ्यता में' - पाठ के लेखक को क्यों लगता है कि 'हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है? आप क्या मानते हैं? अपने विचार लिखिए।**	6
	अथवा	
	''सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के पर धक्के सहते हें पर मैदान में डटे रहते हैं।'' 'सूरदास की झोपड़ी' पाठ का यह कथन पाठकों को क्या संदेश देता है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।	6

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

हिंदी ऐच्छिक प्रतिदर्श प्रश्न पत्र-1

(अंक योजना)

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्र.सं.	संभावित उत्तर संकेत/ मूल्य बिन्दु	अंक
	खण्ड 'क'	
1.	**अपठित गद्यांश बोध**	
क)	शीर्षक - 'सार्वजनिक जीवन : तालाब' **अथवा** 'तालाब और हमारा जीवन' (अन्य शीर्षक भी स्वीकार्य हो सकता है)	1
ख)	अमावस्या और पूर्णिमा को सार्वजनिक कामों का दिन माना गया है। इन दोनों दिनों में व्यक्ति अपने निजी कामों से हटकर सार्वजनिक कामों से स्वयं को जोड़ता है। इस दिन किसान अपने खेतों में काम नहीं करते थे वे उस समय का उपयोग अपने क्षेत्र के तालाबों की देखरेख और मरम्मत में करते थे।	2
ग)	तालाब को तीर्थ इसलिए माना गया क्योंकि तालाब सब घरों के मिले-जुले प्रयासों से बनता था, उसकी देखभाल भी सभी करते थे। सबका मेल ही तीर्थ है। जो तीर्थ जाने में असमर्थ हो वह तालाब को बनाने का कार्य और देखभाल का कार्य करता था।	2
घ)	तालाब समाज के तन-मन में बसा रहा है। लोग उसे तीर्थ के समान महत्त्व देकर उसकी देखभाल करते रहे हैं और बनवासी समाज तो शरीर पर तालाब और बावड़ी गुदवाते रहे हैं। इस तरह तालाब तन-मन में बसा हुआ है। इसलिए वह एक पानी का गड्ढा मात्र नहीं, एक जीवंत परंपरा है, एक परिवार है।	2
ङ)	तालाब का पूरा भर जाना महोत्सव की अनुभूति देता है। जल जीवन का पर्याय है। इसलिए भारत में भरे-पूरे तालाब की पूजा की जाती है। प्रजा से राजा तक घाट पर आकर पूजा करते हैं और पूरे भरे तालाब का आशीर्वाद लेकर घर जाते हैं।	2
च)	कोई भी तालाब अकेला नहीं होता - अर्थात् उस तालाब के जल में अनेक जल स्रोतों का जल मिला होता है। इस तरह वह भरे-पूरे जल परिवार का सदस्य होता है। सब लोगों का मिला-जुला प्रयास उसकी देखभाल करता है। इस तरह पूरे समाज का संबंध तालाब से होता है। सबका जल उसमें समाया होता है और समाज के सब लोगों का संबंध उस तालाब से होता है।	2

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
छ)	बिंदुसागर राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। वह भारत के सभी जल स्रोतों, नदियों, समुद्रों का मिला हुआ रूप है। दूर-दूर से और सभी दिशाओं से आने वाले भक्त अपने साथ अपने क्षेत्र का थोड़ा-सा जल लाते हैं और बिंदुसागर को अर्पित करते हैं। इस प्रकार बिंदुसागर भारत की एकता और अखण्डता का प्रतीक माना गया है।	2
ज)	तालाब के विवाह की विधि को पूरा करने के लिए पहले धूमधाम से प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, आसपास के मंदिरों की मिट्टी लाई जाती है, गंगा जल आता है और पाँच-सात कुओं या तालाबों का जल मिलाकर विवाह पूरा होता है। सभी सार्वजनिक स्थलों की मिट्टी और जल को तालाब में डालकर इसका संबंध सबके साथ जोड़ा जाता है।	2
2.	**किसी एक काव्यांश के उत्तर अपेक्षित हैं -**	
क)	इस कविता में वंसत ऋतु का वर्णन है। वंसत का प्रभाव घर, मार्ग और वन में सर्वत्र दिखाई दे रहा है।	1
ख)	फागुन माह में वंसत के आने से हृदय में कोमल भावनाएँ सुलग उठती हैं, दिल में शीतल-सी ज्वाला (विरोधाभास) जलती है जिसकी जलन अच्छी लगती है।	1
ग)	वसंत ऋतु ने फूल-पत्तों में अनेक परिवर्तन ला दिए हैं। पत्तों में नई लालिमा दिखाई देती है, फूलों में पीली-नीली लौ की दीप्ति दिखाई देती है, गुलाब की लाली होठों की लाली सी दिखाई देती है, फूलों की पंखुड़ियाँ तरह-तरह की दिखाई देती है।	1
घ)	वंसत प्रेमी के रूप में कलियों की आँखों में मिलन के स्वप्न (आकांक्षा) जगाता है। उनके हृदयों में प्रेमी-गीत की गुनगुनाहट उत्पन्न करता है।	1
ङ)	इसमें प्रकृति का उद्दीपन रूप बहुत मनोहारी है। वसंत ऋतु में प्रकृति हमारे मन की कोमल भावनाओं को जागृत करती है तथा प्रेममय वातावरण का निर्माण करती जान पड़ती है।	1
	अथवा	
क)	कवि ग्राम देवता को नमस्कार कर रहा है क्योंकि वह धन दौलत के स्थान पर इस धरती की मिट्टी को प्यार करता है। वह शोर-शराबे से दूर एकांत वातावरण में रहता है।	1
ख)	वह ग्राम देवता अपने प्राणों से संसार में प्रकाश करता है, वह जड़ में चेतनता का संचार करता है, वह एक-एक दाने से सौ-सौ दाने उगाता है, वह खेतों में परिश्रम कर अपना पसीना बहाता है?	1
ग)	किसान के पसीने की धारा को गंगा की धवल धार कहा गया है क्योंकि किसान मेहनत करके खेतों में फसलें उगाते हैं, जड़ में चेतनता का संचार करते हैं। इनके द्वारा उत्पन्न अन्न से सबका पोषण होता है।	1
घ)	कवि ग्राम देवता को जन-मन का अधिनायक मानता है, वह उसे देश के सिंहासन पर बिठाता है। वही इस देश का असली शासक है। ये उपजाऊ खेत उसी के साम्राज्य का हिस्सा हैं।	1

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
ङ)	यह ग्राम देवता किसान है। कवि उसके प्रति आदर-सम्मान का भाव रखता है। कवि उसकी आरती उतारना चाहता है और उसे नमस्कार करता है।	1
	खण्ड ख	
3.	**किसी एक विषय पर 400 शब्दों में निबंध अपेक्षित है।**	**10**
	भूमिका	1
	विषय वस्तु का सुसम्बद्ध प्रतिपादन	5
	उपसंहार	1
	भाषा शुद्धता और अभिव्यक्ति शैली	3
क)	**कक्षा का अविस्मरणीय दिन**	
	विद्यालय – विद्या का मंदिर, अनेक विद्यालयों में सबसे प्रतिष्ठित विद्यालय, विद्यालयी शिक्षा का व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्व	
	मेरी कक्षा – कक्षा की बनावट, उपलब्ध सुविधाओं का वर्णन,	
	विद्यालय निरीक्षण का दिन, उसकी विशेष तैयारियाँ,	
	शिक्षा निदेशक और शिक्षा अधिकारी का कक्षा में प्रवेश, उनके द्वारा कक्षा की गतिविधियों का ब्यौरा लेना, उत्तर पुस्तिकाओं और अभ्यास पुस्तिकाओं की जाँच आदि करना, बातचीत के दौरान मुझे कक्षा का विशिष्ट विद्यार्थी घोषित करना ...	
	इस प्रकार अनेक बिंदुओं पर निबंध का विस्तार होगा, यह विस्तार/वर्णन प्रत्येक विद्यार्थी का भिन्न होगा। प्रत्येक विद्यार्थी की मौलिक अभिव्यक्ति को स्वीकार किया जाए।	
ख)	**प्रगति है देश की तभी, जब साक्षर होंगे हम सभी**	
	(i) भूमिका – "चारों ओर फैला, निरक्षरता का अंधकार है। सब छोड़कर करना अब, साक्षरता का प्रचार है।।"	
	(ii) राष्ट्र के नागरिकों का कर्त्तव्य ...	
	(iii) शिक्षा सबका अधिकार	
	(iv) साक्षरता एक वरदान....	
	(v) निरक्षरता एक अभिशाप	
	(vi) साक्षरता अभियान .... सर्व शिक्षा अभियान	
	(vii) उपसंहार	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	''साक्षरता के अभियान को, गली-गली पहुँचाना है। अपने देश का नाम विश्व में, सर्वोच्च स्तर पर लिखवाना है।''	
ग)	**दिल्ली मैट्रो : मेरी मैट्रो**	
	(i) भूमिका ... उन्नति के नए साधन	
	(ii) मैट्रो योजना का आरंभ – 1995 में केन्द्र सरकार और दिल्ली-सरकार ने संयुक्त रूप से डी. एम.आर.एसी. का पंजीकरण कराया। 1996 में 62.5 कि.मी. की लंबाई वाली योजना को स्वीकृत। 24 दिसंबर 2002 को पहली मैट्रो का उद्घाटन।	
	(iii) विभिन्न चरण...	
	(iv) प्रमुख विशेषताएँ	
	(v) सुरक्षा के प्रबंध	
	(vi) आवश्यक निर्देश – नागरिकों को सुविधा	
	(vii) उपसंहार	
4.	**पत्र-लेखन**	
	पत्र का प्रारूप – औपचारिकताएँ	2
	विषय वस्तु का प्रतिपादन	2
	भाषा की शुद्धता	1
	दिनांक सेवा में निर्देशक विप्रो प्रा. लिमिटेड न्यू लिंक रोड़ अंधेरी, मुंबई-400053	
	विषय – कंप्यूटर इंजीनियर पद के लिए आवेदन	
	महोदय,	
	आज 25 मार्च 2008 को नवभारत टाइम्स, दिल्ली के प्रात: संस्करण में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आपकी कंपनी को कंप्यूटर इंजीनियर की आवश्यकता है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन प्रस्तुत करता हूँ।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	मेरा स्ववृत्त इस आवेदन के साथ संलग्न है। इसका अवलोकन करने पर आप पाएँगे कि मैं इस पद के लिए पूरी तरह उपयुक्त उम्मीदवार हूँ। मैं विज्ञापन में आपके द्वारा वर्णित सभी योग्यताओं और अर्हताओं को पूरा करता हूँ। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है – क) मैं विज्ञान का छात्र रहा हूँ ... ख) .... ग) .... घ) ..... अनुरोध है कि उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मेरे आवेदन पर सकारात्मक रूप से विचार करें और मुझे कंप्यूटर इंजीनियर के पद पर नियुक्त करें। सधन्यवाद भवदीय नरेन्द्र (नरेन्द्र कुमार) स्ववृत्त नाम : नरेन्द्र कुमार पिता का नाम : .... माता का नाम : .... जन्म तिथि : .... वर्तमान पता : .... स्थायी पता : .... टेलीफोन न. : .... मोबाइल न. : .... ई मेल : .... शैक्षिक योग्यताएँ :	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	क्र.स. परीक्षा/डिग्री वर्ष बोर्ड/वि.विद्यालय विषय श्रेणी प्रतिशत 1 ____________________ 2 ____________________ 3 ____________________ अन्य सबंधित योग्यताएँ 1 ____________________ 2 ____________________ 3 ____________________ उपलब्धियाँ 1 ____________________ 2 ____________________ 3 ____________________ कार्येत्तर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ 1. ____________________ 2 ____________________ वैसे सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों 1 ____________________ 2 ____________________ हस्ताक्षर ____________________ तिथि ____________________ स्थान ____________________ अथवा	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	दिनांक ______________________ सेवा में ______________________ निदेशक दूरदर्शन केन्द्र कॉपरनिकस मार्ग नई दिल्ली विषय: **दूरदर्शन के कार्यक्रमों की समीक्षा के संबंध में** महोदय आजकल प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों .... (अपने विशेष सुझाव) .... सधन्यवाद भवदीय नरेन्द्र (नरेन्द्र कुमार) (पत्र में विद्यार्थी अपने-अपने विचारों और सुझावों को लिखेंगे। सबके स्वतंत्र और मौलिक विचारों को स्वीकार किया जाए।) सभी प्रारूप-औचारिकताओं और विषय संबंधी आवश्यक विचारों के प्रतिपादन पर विद्यार्थी को पूरे अंक दिए जाएँ।	
5.	**टेलीविजन जनसंचार का सबसे लोकप्रिय और सशक्त माध्यम है। इसमें शब्द ध्वनि के साथ-साथ जब दृश्य का भी समावेश हो जाता है तो सूचना और भी विश्वसनीय हो जाती है। दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य माध्यम है। दूरदर्शन पर सूचना निम्नलिखित सोपानों को पार करके दर्शकों तक पहुँचती है -** (i) फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज (ii) ड्राई एंकर (i) फोन-इन (iv) एंकर विजुअल	5

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	(v) एंकर बाइट (vi) लाइव (vii) एंकर पैकेज (उपर्युक्त सोपानों को (प्रत्येक को) 2.3 वाक्यों में स्पष्ट किया जाना अपेक्षित है) उत्तर में प्रमुख पांच बिंदुओं के स्पष्टीकरण पर पूरे पाँच अंक दिए जाएँ। अथवा विशेष लेखन की शैली निश्चित नहीं होती। बीट से सबंधित समाचार में 'उलटा पिरामिड शैली' का प्रयोग होता है। समाचार फीचर में कथात्मक शैली को अपनाया जाता है। लेख या टिप्पणी का आरंभ फीचर की तरह होने से कथात्मक शैली का ही प्रयोग होता है, क्योंकि उसका आरंभ किसी घटना से करके पुराने संदर्भों को नवीन संदर्भों से जोड़ दिया जाता है। घटनाक्रम के अनुसार शैली को अपनाना उपयुक्त है। महत्ता इस बात की है कि किसी विशेष विषय पर लिखा लेख सबसे अलग हो। वह इतना अधिक प्रभावशाली होना चाहिए कि पाठक उसे पढ़े बिना न रह सके उसकी छाप पाठक के मन मस्तिष्क पर बनी रहनी चाहिए। उस क्षेत्र विशेष की विशेष शब्दावली का ज्ञान भी पत्रकार को होना चाहिए।	
6.	क. **भारत में नियमित अपडेट साइटें हैं -** एन डी टी वी टाइम्स ऑफ इंडिया	1
	ख. **विशेष रिपोर्ट के प्रकार** (i) खोजी रिपोर्ट (ii) इनडेप्थ रिपोर्ट (iii) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट (iv) विवरणात्मक रिपोर्ट (कोई दो प्रकार बताना अपेक्षित है)	1
	ग. भारत में समाचार पत्रकारिता का आरंभ सन् 1780 में जेम्स ऑगस्ट हिकी के 'बंगाल गज़ट' से हुआ।	1
	घ. भारत में प्रथम छापाखाना सन् 1556 में गोवा में खुला था।	1
	ङ 'दैनिक जागरण' और 'अमर उजाला' समाचार-पत्रों के वेब संस्करण इंटरनेट पर प्राप्त है।	1

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	खण्ड ग	
7.	**काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या**	**8**
	संदर्भ – कविता और कवि का नाम	1
	कविता का प्रसंग	1
	व्याख्या – व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण	4
	विशेष – काव्य पंक्तियों की शिल्पगत विशेषताओं का उल्लेख	1
	भाषा शुद्धता और अभिव्यक्ति शैली	1
	तोड़ो तोड़ो .... गोड़ो गोड़ो गोड़ो।	
	प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ रघुवीर सहाय द्वारा रचित कविता 'तोड़ो' से ली गई है। कवि नव निर्माण तथा विकास के लिए पत्थरों चट्टानों तथा झूठे बंधनों और रूढ़ियों को तोड़ने के लिए प्रेरणा देता है। सृजन में बाधक तत्वों को नष्ट कर भाव सृजन करने के लिए प्रेरणा दे रहा है।	
	व्याख्या बिंदु	
	नव-निर्माण और विकास के लिए पत्थर, चट्टानों, झूठे बंधनों और रूढ़ियों को तोड़कर धरती को समतल बनाने मन रूपी धरती के रस को पहचानने का आह्वान किया गया है। मन रूपी मैदानों की ऊब-खोज को मिटाकर नव-निर्माण रूपी नव फसलों को पैदा करना होगा। उसी प्रकार सृजनात्मक साहित्य की रचना के लिए भी मन को परंपरागत रूढ़ियों के बंधनों से मुक्त करना होगा। अनुपजाऊ बंजर-परती धरती को खोद कर खेती योग्य बनाना होगा। मन की खोज और ऊब को नष्ट करके मन की रस-ऊर्जा को सृजनात्मक कार्यों की ओर उन्मुख करना होगा।	
	(उपयुक्त व्याख्या – बिदुंओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित है)	
	विशेष –	
	1. परांपरागत रूढ़ियों को नष्ट कर नव निर्माण का आह्वान	
	2. पुनरुक्ति प्रकाश, रूपक और अनुप्रास अलंकार	
	3. उद्‌बोधनात्मक शैली, मुक्त छंद की रचना	
	4. भाषा सहज, सरल और भावों के अनुरूप	
	अथवा	
	राघौ एक बार फिरि .... इन्हको बड़ो अंदेसो।।	
	प्रसंग – प्रस्तुत पद राम भक्त कवि तुलसीदास द्वारा रचित 'गीतावली' के अयोध्याकाण्ड से अवतरित	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	है। इस पद में राम वन गमन से संतप्त अयोध्या के घोड़ों की दशा की वर्णन करते हुए माता कौशल्या राम को अयोध्या आने के लिए कहती है।	
	व्याख्या – बिन्दु – हे राघव! तुम एक बार वन से अवश्य लौट आओ और अपने श्रेष्ठ घोड़ों को देखकर फिर से वन चले जाना। जिन्हें तुमने दूध पिलाकर अपने कर-कमलों से बार-बार पुचकारा-दुलारा था। इन घोड़ों को तुम एकदम भुला दोगे तो ये जीवित कैसे रहेंगे? इन्हें तुम्हारे बहुत प्रिय घोड़े जानकर, भरत इनकी सौ गुनी देखभाल करते हैं फिर भी ये तुम्हारे वियोग में दिन-प्रतिदिन इस प्रकार दुर्बल होते जा रहे हैं जैसे कमल को पाले ने मार दिया हो। किसी पथिक को संबोधित करते हुए माता कौशल्या कहती है कि हे पथिक! सुनो यदि तुम्हें राम वन में कहीं मिलें तो उन्हें कहना कि माता कौशल्या को सबसे अधिक उनकी चिंता लगी हुई है।	
	(उपर्युक्त व्याख्या – बिन्दुओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित है)	
	विशेष	
	1. राम के वियोग में नर-नारी और पशु पक्षी सब व्यक्ति हैं।	
	2. पुनरुक्ति प्रकाश, अनुप्रास, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार	
	3. वियोग श्रृंगार रस	
	4. ब्रज भाषा	
	5. पद छंद	
	6. स्वरमैत्री के कारण गेयता का गुण	
8.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित है –** (3+3)	6
	(प्रत्येक उत्तर में तीन बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित है)	
क)	कवि ने 'दीप अकेला' को उस अस्मिता का प्रतीक माना है जिसमें लघुता में भी ऊपर उठने की गर्वभरी व्याकुलता है। उसमें प्रेम रूपी तेल भरा है। यह अकेला होते हुए भी एक आलोक स्तंभ के समान है जो समाज का कल्याण करेगा और अपने मदमाते गर्व के कारण सबसे अलग दिखाई देगा।	
ख)	सत्य की पहचान के लिए कवि ने यह संकेत दिया है कि सत्य कोई बाहरी वस्तु नहीं है यह तो अंतर्मन की एक शक्ति है। इसे पहचानने के लिए हमें युधिष्ठिर जैसा संकल्प लेना होगा तभी हम सत्य को पहचान सकते हैं। सत्य हमारी आत्मा में कभी-कभी दमकता हुआ अनुभव होता है। जिसका प्रकाश हमारे अंतर्मन में समाकर एक सात्विक अनुभूति देता है।	
ग)	आज मनुष्य का नाता प्रकृति से टूट रहा है, यही कवि की मुख्य चिंता है। उसे ऋतु परिवर्तन का ज्ञान प्राकृतिक परिवर्तनों को देखकर महसूस करके नहीं अपितु कैलेंडर को देखकर होता है। उसे वंसत-वसंत पंचमी का आगमन प्रकृति के सानिध्य में रहकर पत्तों का झड़ना, नई कोपलों का फूटना,	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	सुगंधित मंद समीर का बहना, ढाक के जंगलों का दहकनां, कोयलों का कुहुकना आदि को देखकर नहीं होता, वह कैलेंडर देखकर जानता है कि आज वसंत पंचमी है।	
9.	**काव्य सौंदर्य** 3+3	6
	(किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करना अपेक्षित है)	
	भाव-सौंदर्य - स्पष्टीकरण	1½
	शिल्प सौंदर्य - स्पष्टीकरण	1½
	कुल अंक 3	
क)	**पिय सौ कहेहु .... धुआँ हम लाग॥**	
	भाव सौंदर्य	
	मलिक मुहम्मत जायसी द्वारा रचित 'पदमावत' के 'बारह मासा' प्रसंग की इन पंक्तियों की इन पंक्तियों में राजा रत्नसेन के वियोग में संतप्त रानी नागमती भ्रमर और काग को संबोधित करते हुए कहती है कि हे भ्रमर। और हे काग! तुम मेरे प्रियतम के समीप पहुँचकर उन्हें यह संदेशा देना कि आपकी प्रियतमा वियोगाग्नि में जल-जल कर मर गई और उसका धुआँ लगने के कारण ही हमारे शरीर काले पड़ गए हैं।	
	शिल्प सौंदर्य	
	1. नागमती की विरहावस्था का मार्मिक और सजीव चित्रण	
	2. विरह का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन	
	3. श्रृंगार रस के वियोग पक्ष का हृदयस्पर्शी वर्णन	
	4. अवधी भाषा का सहज प्रयोग	
	5. स्वरमैत्री के कारण लयात्मकता का गुण	
	6. कविता में माधुर्य गुण	
	7. दोहा छंद	
	8. दृश्य बिम्ब	
ख.	**हेम कुंभ ले .... रजनी भर तारे।**	
	भाव सौंदर्य	
	छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कार्नेलिया का गीत' की इन पंक्तियों में प्रात: कालीन वातावरण के सौंदर्य का चित्ताकर्षक वर्णन किया गया है। उषा रूपी सुंदरी स्वर्णिम कलश से	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	सुबह-सुबह मेरे लिए समस्त सुख उड़ेल देती है। जब सारी रात जागने के कारण तारे मस्ती में ऊँघने लगते हैं।	
	शिल्प सौंदर्य –	
	1. भारत में प्रातः कालीन सौंदर्य की अनुपम छटा दिखाई देती है।	
	2. प्रस्तुत पंक्तियों में उषा और तारों का मानवीकरण किया गया है।	
	3. रूपक और अनुप्रास अलंकार	
	4. भाषा तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली है।	
	5. भाषा में लाक्षणिकता और प्रतीकात्मकता का गुण है।	
	6. प्रातःकालीन सौंदर्य का सुंदर बिम्ब प्रस्तुत किया गया है।	
	7. कविता में माधुर्य और प्रसाद गुण है।	
ग)	**भर गया है जहर ....फिर सींचने को।**	
	भाव सौंदर्य	
	'गीत गाने दो मुझे' नामक कविता की प्रस्तुत पंक्तियों में कविवर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने संसार में व्याप्त लूट-खसोट से निराश लोगो को अपनी व्यथा को भुलाकर पुनः व्यवस्था स्थापित करने का आह्वान किया है। सर्वत्र फैली विषमता और निराशा को त्यागकर मानवीय संवेदनाओं की अपनी ज्योति से इस धरती को पुनः सींचना होगा।	
	शिल्प-सौंदर्य	
	1. प्रस्तुत पंक्तियों में मानवता के कल्याण की सद्भावना से युक्त गीतों को रचने की कामना अभिव्यक्त हुई है।	
	2. कवि का मानवतावादी दृष्टिकोण स्पष्ट होता है।	
	3. अनुप्रास, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास अलंकार का प्रयोग	
	4. भाषा में लाक्षणिकता का गुण है।	
	5. सहज-स्वाभाविक खड़ी बोली का प्रयोग है।	
	6. छंद मुक्त कविता है।	
	7. कविता में प्रसाद गुण है।	
10.	**गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या**	**6**
	संदर्भ –पाठ और लेखक का नाम	1

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	पूर्वापर संबंध	1
	व्याख्या –प्रमुख व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण	3
	विशेष –विशेष टिप्पणी और भाषा शैली गत विशेषताओं का उल्लेख	1
	कुछ दिनों बाद .... रोजगार का दफ्तर है?	
	प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण असगर वजाहत द्वारा लिखित 'शेर' नामक लघुकथा से अवतरित है। इसमें लेखक ने शेर को व्यवस्था का प्रतीक माना है और उसकी कार्य प्रणाली पर व्यंग्य किया है।	
	व्याख्या – कुछ दिनों से सुना जा रहा है कि शेर अहिंसा और सह अस्तित्व का बहुत अच्छा समर्थक हो गया है इसलिए वह जंगली जानवरों का शिकार नहीं करता। शेर के मुँह में सभी जानवर बिना किसी आपत्ति के घुसे चले जा रहे हैं तो शेर को शिकार करने की क्या आवश्यकता है। व्यवस्था रूपी शेर के पास सब भ्रमवश चले तो जाते हैं किन्तु उन्हें कुछ भी नहीं मिलता केवल निराशा ही हाथ लगती है। आज देश की व्यवस्था अहिंसा वादी और सह-अस्तित्ववादी होने का दंभ रही है लेकिन वास्तविकता एकदम भिन्न है।	
	विशेष –	
	1. वर्तमान समाज की भ्रष्टव्यवस्था पर तीखा व्यंग्य है।	
	2. प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक भाषा शैली का प्रयोग हुआ है।	
	3. तत्सम, तद्‌भव, उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का सहज प्रयोग है।	
	अथवा	
	यदि साहित्य समाज .... कला का खंडन हो गया	
	प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश राम विलास शर्मा द्वारा रचित 'यथास्मै रोचते विश्वम्' नामक पाठ से लिया गया है इसमें लेखक ने साहित्य, समाज और कला के महत्त्व को प्रतिपादन किया है।	
	व्याख्या – यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो संसार को बदल डालने की बात न होती। यदि एक कवि का कार्य यथार्थ जीवन को प्रतिबिंबित करना ही होता तो वह एक प्रजापति का स्थान ग्रहण न करता। वास्तव में प्रजापति ने जो समाज बनाया है उससे असंतुष्ट होकर एक नए समाज का निर्माण करना कविता का जन्म सिद्ध अधिकार है। यूनानी विद्वानों ने कला को जीवन की नकल कहा है और अफलातून ने इस सारहीन संसार को असल की नकल माना और कला को नकल की नकल कहा था लेकिन अरस्तू ने ट्रेजेडी के लिए माना है कि संसार में जैसे मनुष्य हैं वे उससे बढ़चढ़ कर चित्रित किए जाते हैं इस प्रकार अरस्तू का मत नकल-नवीस कला का खंडन करता है।	
	विशेष –	
	1. लेखक ने कला के विषय में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विचारों का उल्लेख किया है।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	2. भाषा सरल, सहज एवं साहित्यिक खड़ी बोली है।	
	3. तत्सम्, तद्भव और विदेशज शब्दों का प्रयोग है।	
11.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित है -** (4+4)	**8**
	(प्रत्येक उत्तर में प्रमुख चार बिदुओं का उल्लेख किया जाए तो विद्यार्थी को पूरे अंक प्रदान किए जाए)	
क.	'कच्चा चिट्ठा खोलना' का अर्थ है जीवन की सच्चाईयों का वर्णन करना अर्थात् बिल्कुल साफ-साफ कहना। प्रस्तुत पाठ लेखक की आत्मकथा 'मेरा कच्चा चिट्ठा' का एक अंश है। इसमें लेखक ने अपने जीवनकी सभी अच्छी-बुरी बातों से पाठकों का साक्षात्कार करवाया है। लेखन को अपने जीवन में प्रयाग संग्रहालय निर्माण के लिए जो-जो कार्य करने पड़े उनका सत्य रूप में चित्रण किया है। देश के कोने-कोने से वस्तुओं का संग्रह किया। एक बुढ़िया से दो रुपये में बोधिसत्व की आठ फुट लम्बी मूर्ति को संग्रहालय में स्थापित किया जो संसार की सबसे पुरानी मूर्ति है। इस प्रकार कच्चा चिट्ठा के माध्यम से अपने जीवन की अनमोल यादों का यथार्थ प्रस्तुत किया है।	
ख.	औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट इसलिए पैदा कर दिया है क्योंकि पर्यावरण असंतुलन बढ़ता ही जा रहा है। औद्योगिक विकास के कारण कृषि योग्य भूमि को उजाड़ रहे है। खनिज संपदा नष्ट हो रही है। बसे -बसाए लोगों को उजाड़कर विस्थापित किया जा रहा है। हरे-भरे वन-वनस्पति काटे जा रहे हैं।	
ग)	मानव जीवन में सुख और दुख धूप-छाया के समान आते-जाते रहते हैं। दुख के बाद सुख तथा सुख के बाद दुख की अनुभूति होना अनिवार्य है मानव जीवन में सुखी वही है जिसका मन वश मे हैं जिसका मन परवश है वह हमेशा दुखी रहता है। परवश होने का अर्थ है - खुशामद करना, दाँत निपोरना, चापलूसी और जी-हजरूी करना। जिसका मन अपने वश में नहीं रहता वह दूसरे मन के पर्दे खोलता रहता है और झूठे आडंबर रचता है और दूसरों को फँसाने के लिए जान बिछाता है।	
12.	**किसी एक लेखक अथवा कवि का जीवन परिचय अपेक्षित है-**	**6**
	(i) संक्षिप्त जीवन-परिचय	2
	(ii) रचनाओं के नामों का उल्लेख, साहित्यिक योगदान	2
	(i) दो काव्यगत अथवा भाषा शैलीगत विशेषताओं का स्पष्टीकरण	2
	केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई 1934 ई में बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. करने के बाद आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान विषय पर पी0एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा केन्द्र में हिन्दी के प्रोफेसर के पद से अवकाश प्राप्त किया सम्प्रति दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।	
	प्रमुख रचनाएँ - काव्य संग्रह - अभी बिलकुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	आलोचनात्मक पुस्तक – कल्पना और छायावाद **निबंध संग्रह** – मेरे समय के शब्द और कब्रिस्तान में पंचायत **काव्यगत विशेषताएँ** – (कविता के संदर्भ में विस्तार अपेक्षित है) (i) सौंदर्य और प्रेम से युक्त काव्य (ii) आस्था और विश्वास का स्वर – उदाहरण "किसी अलक्षित सूर्य को .... अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर" (i) सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति उदाहरण – "यह धीरे-धीरे होना कि हिलता नहीं है कुछ भी।" (iv) संघर्षशीलता का स्वर (किन्हीं दो काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख अपेक्षित है। अपेक्षित बिंदुओं को – जीवन परिचय, रचनाएँ और दो काव्यगत विशेषताएँ, लिखने पर पूरे अंक दिए जाए।) अथवा **तुलसीदास** – भक्तिकाल की सगुण व्यक्ति धारा के राम भक्त कवि तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई. में बाँदा जिले में राजा पुर गाँव में हुआ था। उन्होंने 'रामचरित मानस' के द्वारा राम काव्य तो समृद्ध किया हो, साथ ही तत्कालीन समाज का मार्ग दर्शन भी किया। **रचनाएँ** – रामचरित मानस, गीतावली, कवितावली, विनय पत्रिका और कृष्ण गीतावली। **कालगत विशेषताएँ** – (कविता के संदर्भ में विस्तार अपेक्षित है) (i) राम की भक्ति और सगुण – निर्गुण भक्ति में समन्वय की भावना (ii) जीवन के विविध रूपों का यथार्थ चित्रण (i) लोक मंगल और समन्वय की भावना (iv) विविध रसों, भावों का चित्रण (v) ब्रज और अवधी भाषा में रचना अथवा	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	आचार्य रामचंद्र शुक्ल आचार्य शुक्ल हिन्दी के महान आलोचक, इतिहासकार और साहित्यकार थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अंगोना नामक गाँव में सन् 1844 ई. में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा मिर्जापुर के जुबली स्कूल में हुई थी। 1901 ई. में उन्होंने मिशन हाई स्कूल से फाइनल की परीक्षा पास की। 1905 ई. में काशी नागरी प्रचारिणी सभा में 'हिन्दी शब्द सागर के सहायक संपादक के पद पर नियुक्त हुए। कुछ समय हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक रहे। **प्रमुख रचनाएँ** – हिन्दी साहित्य का इतिहास, गोस्वामी तुलसीदास, चिंतामणि (चार खंड), रस मीमांसा, जायसी ग्रंथावली, भ्रमरगीत सार आदि। **भाषा शैलीगत विशेषताएँ** – (पाठ के संदर्भ में विस्तार अपेक्षित है।) (i) गंभीर विवेचनात्मक शैली (ii) कथन का चमत्कार पूर्ण प्रयोग (i) हास्य-व्यंग्य प्रधान शैली (iv) समास और व्यास शैली आदि अथवा **पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी** **जीवन परिचय** – हिन्दी के प्रमुख रचनाकार पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म 1883 ई. को पुरानी बस्ती जयपुर में हुआ था। वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, उनकी रुचि विज्ञान में थी, प्राचीन इतिहास और पुरातत्त्व उनका प्रिय विषय था। 1904 से 1922 तक अनेक महत्त्वपूर्ण संस्थानों में प्राध्यापक के पद पर कार्य किया। **प्रमुख रचनाएँ** – गुलेरी जी की सृजनशीलता के चार प्रमुख पड़ाव है – 'समालोचक (1903-06 ई.) मर्यादा (1911-12 ई.), प्रतिभा (1918-20) और नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1920-22) इन पत्रिकाओं में गुलेरी जी का रचनाकर व्यक्तित्व बहुविध उभर कर सामने आया। उन्होंने उत्कृष्ट निबंधों के अतिरिक्त तीन कहानियाँ – सुखमय जीवन, बुद्धू का काँटा और उसने कहा था – हिन्दी जगत को दी। 'इतिहास दिवाकर' की उपाधि से उन्हें सम्मनित किया गया। **साहित्यिक विशेषताएँ** – (पाठ के संदर्भ में विस्तार अपेक्षित है) (i) समाज का यथार्थ चित्रण (ii) वर्जनात्मक, चित्रात्मक, विवरणात्मक शैलियों का प्रयोग (i) आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग, सजीव दृश्य चित्रण शैली का प्रयोग	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
13.	**किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं** (3+3+3)	9
	(प्रत्येक उत्तर में तीन बिंदुओं का उल्लेख होने तथा भाषा की सहज व शुद्ध अभिव्यक्ति घर पूरे तीन अंक दिए जाएँ।)	
क)	जब सूरदास की झोंपडी को लोगों ने जलते हुए देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि इसमें आग किस कारण फैली। जगधर ने जब सूरदास से पूछा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि चूल्हें की किसी चिनगारी के कारण आग लग गई हो। इसी सच्चाई को जानने के लिए सूरदास से कहा कि क्या इसने चूल्हे की आग को शांत किया था। प्रत्युत्तर में नायक राम ने इसका प्रतीकार्थक अर्थ स्पष्ट किया और कहा कि सूरदास को सहज रूप से जीवन-यापन करते हुए देखकर कुछ लोग ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगे थे। इसी कारण उन्होंने अपने मन की ईर्ष्या की आग को शांत करने के लिए यह कार्य किया।	
ख)	रूप सिंह लोगों को पहाड़ पर चढ़ाने का प्रशिक्षण देता है। इस प्रशिक्षण में कई आधुनिक उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। रूप सिंह ने कई साहसिक अभियानों में भाग लिया था लेकिन जब उसे ऊपर भूपसिंह के घर के लिए चढ़ने में कठिनाई हुई क्योंकि उसके शरीर का संतुलन बिगड़ गया तब उसे भूपसिंह ने अपने मफलर की सहायता से ऊपर चढ़ाया। भूपसिंह बिना किसी आधुनिक उपकरणों के बहुत सरलता से ऊपर चढ़ गया तथा रुप सिंह को भी चढ़ाने में सहायता की। भूपसिंह की कुशलता और हिम्मत के समक्ष रूप सिंह बौना पड़ गया।	
ग)	गाँव में अनेक फूल पाए जाते हैं - कमल, कोइयाँ, हरसिंगार, कदंब, तोरी, लौकी, अमरूद ....आदि। इसके साथ गाँव में ऐसे फूल भी होते हैं जो रोगों को दूर करते हैं - भरभंडा के फूल का दूध आँख आने पर लगाने से रोग दूर हो जाता है। नीम के फूल और पत्ते चेचक के रोगी के पास रखे जाते हैं। बेर का फेल सूँघने से ततैया का डंक झड़ जाता है। इस प्रकर कहा जा सकता है कि फूल केवल गंध ही नहीं देते, दवा भी देते हैं।	
घ)	अब धरती का वातावरण गरम हो गया है क्योंकि कार्बन डाइऑक्साइड गैसों ने धरती के तापमान को कई डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है जिससे मौसम का संतुलन बिगड़ गया है। यही कारण है कि कभी-कभी अधिक बरसात होने लगती है तो कभी-कभी सूखा पड़ जाता है। आज औद्योगिक विकास के नाम पर प्रकृति की अमूल्य संपदा नष्ट हो रही है इसे आज रोकना होगा।	
14.	**एक उत्तर अपेक्षित है**	
	आज प्रकृति से मानव अपना रिश्ता तोड़ रहा है। औद्योगिक विकास के नाम पर हो रहा है प्रकृति का विनाश, हरियाली का अंत, जल का अभाव और दूषित वातावरण। आज भौतिक विकास के नाम पर मानव तथा अन्य प्राणियों के जीवन के लिए आवश्यक प्राकृतिक साधनों का विनाश हो रहा है। यदि स्थिति यही रहती है तो एक दिन इस पृथ्वी पर मानव व अन्य जीवों का अस्तित्व निश्चित ही समाप्त हो जाएगा। इसलिए लेखक ने कहा है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है। अत: धरती पर हमें जीना है तो जागरूक होना होगा कि औद्योगिकता के साथ-साथ वातावरण दम घोंटू न हो जाए।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	अथवा घीसू का यह वाक्य 'मिठुआ खेल में रोते हो', सूरदास को अंदर तक झकझोर गया। वह चिंता शोक ग्लानि से मुक्त हो उठ खड़ा हुआ। उसे लगा सच्चे खिलाड़ी कभी नहीं रोते, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के सहते हैं, पर मैदान में डटे रहते हैं। किसी से न जलते हैं न चिढ़ते हैं। हिम्मत व धैर्य से काम लेते हैं। जिन्दगी खेल है हँसने के लिए, दिल बहलाने के लिए, रोने के लिए नहीं। हमें भी जीवन को खेल समझकर खेलना है, इसमें निराशा कुंठा का कोई स्थान नहीं। हमें भी सूरदास की तरह सच्चा खिलाड़ी बनकर निराशा में आशा का दामन नहीं छोड़ना है। किसी से ईर्ष्या व जलन नहीं करनी अपितु साहस से विपत्ति और विषम परिस्थितियों का समाना करना चाहिए ईश्वर उसकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करता है। कर्म द्वारा जीवन-संग्राम को जीतना चाहिए। सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर जीवन को सफल बनाना चाहिए। (प्रमुख छह बिन्दुओं का उल्लेख होने पर पूरे छह अंक दिए जाएँ।)	6

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्रश्न पत्र प्रारूप-2

हिंदी ऐच्छिक

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्नों के प्रकार	अपठित बोध	लेखन	साहित्य	विशेष टिप्पणी
अति लघुत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश बोध 1(1) काव्यांश बोध 5(5)	अभिव्यक्ति और माध्यम 5(5)		पठन, अवबोध व लेखन कौशल
लघुत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश बोध 14(7)		कविताओं के अर्धबोध पर प्रश्न 6(2) काव्यांशों का काव्य सौंदर्य 6(2) पूरक पुस्तक के पाठों की विषय वस्तु पर प्रश्न 9(3)	अवबोध व लेखन कौशल पठन, लेखन, व अवबोधन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल
निबंधात्मक प्रश्न		पत्र लेखन 5(1) निबंध लेखन 10(1) अभिव्यक्ति और माध्यम 5(1)	काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या 8(1) गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या 6(1) गद्य् पाठों की विषय वस्तु पर प्रश्न 8(2) कवि लेखन जीवन परिचय 6(1) पूरक पुस्तक के पाठों की विषयवस्तु प्रश्न 6(1)	अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल

नोट : प्रश्न संख्या कोष्ठक के भीतर और अंक कोष्ठक के बाहर है।

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

हिंदी (ऐच्छिक) कोड सं.-002

पाठ्यक्रम कक्षा-12

प्रश्नपत्र-2

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खण्ड 'क'	20
1	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**	15
	परियोजना शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। इसे तैयार करने में किसी खेल की तरह का ही आनंद भी मिलता जाता है। इस तरह परियोजना तैयार करने का अर्थ है-खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाना। उदाहरण के लिए, ऊपर कही गई दशहरों की परियोजना को ही लें। यदि आपको कहा जाए कि इस पर निबंध लिखिए, तो आपको शायद उतना आनंद नहीं आएगा। लेकिन यदि आपसे कहा जाए कि अखबारों में छपे अलग-अलग शहरों के दशहरे के चित्र काट कर अपनी काँपी में चिपकाइए और लिखिए कि कौन-सा चित्र, किस शहर के दशहरे का है, तो शायद आपको बहुत आनंद आएगा। तो इस तरह से चित्र इकट्ठे करके चिपकाना भी एक शैक्षिक परियोजना है। यह एक प्रकार की फोटा-फीचर परियोजना कहलाएगी। इस तरह से न केवल आपने चित्र काटे और चिपकाए, बल्कि कई शहरों में मनाए जाने वाले दशहरे के तरीकों को भी जाना। परियोजना पाठ्य-पुस्तक से प्राप्त जानकारियों के अलावा भी आपको देश-दुनिया की बहुत सारी जानकारियाँ प्रदान करती है। यह आपको तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है। इससे आप में नए-नए तथ्यों के कौशल का विकास होता है। इससे आप में एकाग्रतता का विकास होता है। लेखन संबंधी नई-नई शैलियों का विकास होता है। आप में चिंतन करने तथा किसी पूर्व घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की शक्ति का विकास होता है। परियोजना कई प्रकार से तैयार की जा सकती है। हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है। ठीक उसी प्रकार जैसे हर व्यक्ति का बातचीत करने का, रहने का, खाने-पीने का अपना अलग तरीका होता है। ऐसा निबंध, कहानी, कविता लिखते या चित्र बनाते समय भी होता है। लेकिन ऊपर कही गई बातों के आधार पर यहाँ हम परियोजना को मोटे तौर पर दो भागों में बाँट सकते हैं - एक तो वे परियोजनाएँ जो समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाती है और दूसरी वे जो किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती हैं। समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और उस समस्या के समाधान के लिए सुझाव भी दिए जाते हैं। इस तरह की परियोजनाएँ, प्राय: सरकारी अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य योजना तैयार करते समय बनाई जाती हैं। इससे उस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने में आसनी हो जाती है।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	किन्तु दूसरे प्रकार की परियोजना को आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। इसे शैक्षिक परियोजना भी कहा जाता है। इस तरह की परियोजनाएँ तैयार करते समय आप संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए, बहुत सारी नई-नई बातों से अपने आप परिचित भी होते हैं।	
1.	गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	1
2.	परियोजना क्या है? इसमें क्या मिलता है?	2
3.	शैक्षिक परियोजना क्या है?	2
4.	परियोजना हमें क्या प्रदान करती है?	2
5.	परियोजना किस प्रकार तैयार की जा सकती है?	2
6.	समस्या का निदान करने वाली परियोजना कैसी होनी चाहिए?	2
7.	परियोजना शब्द का निर्माण किस प्रकार से हुआ है?	1
8.	शिक्षा और संबंध शब्दों के विशेषण बनाइए।	1
9.	फोटो-फीचर परियोजना से आप क्या समझते हैं?	1
10.	'देश', 'दुनिया' - शब्दों के एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखिए।	1
2	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	**5**

	कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?
	भिन्न-भिन्न यदि देश हमारे तो किसका संसार?
	    धरती को हम काँटे-छाँटें,
	    तो उस अंबर को भी बाँटें,
	एक अनल है, एक सलिल है, एक अनिल संचार,
	कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?
	    एक भूमि है, एक व्योम है,
	    एक सूर्य है, एक सोम है,
	एक प्रकृति है, एक पुरुष, अगणित रूपाकार,
	कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?	

क.	भिन्न देशों में धरती का विभाजन करने वाले के लिए किसका विभाजन असंभव है?	1
ख.	देशों की भिन्नता को महत्व न देने के लिए क्या तर्क दिए गए हैं?	1

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
ग.	अनल और अनिल शब्दों के अर्थ में क्या अंतर है?	1
घ.	कवि के मन में जन्मभूमि का विस्तार कितना है?	1
ङ	एक प्रकृति है, एक पुरुष है, अगणित रूपाकार – कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।	1

	अथवा
	
	जलता है यह जीवन-पतंग
	जीवन कितना?अति लघु क्षण,
	ये शलभ पुंज से कण-कण,
	तृष्णा वह अनलशिखा, बन-
	जलने की क्यों न उसे उमंग?
	        है ऊँचा आज मगध-शिर
	        पदतल में विजित पड़ा गिर,
	        दूरागत क्रंदन-ध्वनि फिर
	        क्यों गूँज रही है अस्थिर-
	        कब विजयी का अभिमान भंग?
	यह सुख कैसा शासन का?
	शासन रे मानव मन का!
	गिरि-भार बना-सा तिनका,
	यह घटटोप दो दिन का-
	फिर रवि-शशि किरणों का प्रसंग!
	        यह महादंभ का दानव,
	        पीकर उमंग का आसव,
	        कर चुका महाभीषण रव,
	        सुख दे प्राणी का मानव
	        तज विजय-पराजय का कुरंग!	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	क. जीवन की तुलना पतंगे से क्यों की गई है?	1
	ख. 'विजय' और 'विजित' शब्दों का प्रयोग किसके लिए किया गया है?	1
	ग. वास्तविक शासन कौन-सा है?	1
	घ. 'महादंभ का दानव' किसे कहा है?	1
	ङ 'रवि', 'शशि' शब्दों के एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखिए।	1
	खण्ड 'ख'	**25**
3.	**निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लगभग 400 शब्दों मे एक निबंध लिखिए :**	**10**
	क. कर्म ही पूजा है।	
	ख. आतंकवाद : एक समस्या और समाधान।	
	ग. एक कामकाजी औरत की शाम।	
	घ. मानव अस्तित्व के लिए वृक्षारोपण।	
4.	**दिनोंदिन बिगड़ती कानून व्यवस्था की समस्या के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखिए।**	**5**
	अथवा	
	बिजली का मीटर खराब होने की सूचना देते हुए दिल्ली विद्युत बोर्ड के मुख्य अधिकारी को पत्र लिखिए।	
5.	**भारत में इंटरनेट पत्रकारिता के विकास पर एक टिप्पणी लिखिए।**	**5**
	अथवा	
	पत्रकारिता के प्रकार बताते हुए पत्रकारिता में साक्षात्कार का महत्त्व समझाइए।	
6.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में लिखिए -**	**5**
	क. विज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही भारत की किन्हीं दो संस्थाओं के नाम लिखिए।	
	ख. रेडियो समाचार की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।	
	ग. भारत में प्रथम छापाखाना कब और कहाँ खुला?	
	घ. फीचर के किन्हीं दो प्रकारों के नाम लिखिए।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	ङ पत्रकारों के किन्हीं दो प्रकारों के नाम लिखिए।	
	खण्ड 'ग'	**55**
7	**निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**	**8**
	1947 के बाद से इतने लोगों को इतने तरीकों से आत्मनिर्भर मालामाल और गतिशील होते देखा है कि अब जब आगे कोई हाथ फैलाता है पच्चीस पैसे एक चाय या दो रोटी के लिए तो जान लेता हूँ। मेरे सामने एक ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा खड़ा है मानता हुआ कि हाँ मैं लाचार हूँ कंगाल या कोढ़ी या मैं भला चंगा हूँ और कामचोर और एक मामूली धोखेबाज। लेकिन पूरी तरह तुम्हारे संकोच लज्जा परेशानी या गुस्से पर आश्रित तुम्हारे सामने बिल्कुल नंगा निर्लज्ज और निराकांक्षी मैंने अपने को हटा लिया है हर मोड़ से मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं मुझे कुछ देकर या न देकर भी तुम कम-से-कम एक आदमी से तो निश्चिंत रह सकते हो।	
	अथवा	
	सिंधु तरयो उनको बनरा तुम पै धनु रेख गई न तरी। बाँधोई बाँधत सो न बन्यो उन वारिधि बाँधिके बाट करी। श्री रघुनाथ-प्रताप की बात तुम्हें दसकंठ न जानि परी। तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी जरी लंक जराइ जरी।।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
8	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** (3+3) क. सत्य की पहचान हम कैसे करें? 'सत्य' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। ख. 'रहि चकि चित्रलिखी-सी' - पंक्ति का मर्म तुलसीदास के 'पद' कविता शीर्षक के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। ग. 'सरोज-स्मृति' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।	6
9	**निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-** (3+3) क. सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी। निघटी रुचि मीचु घटी हूँ घटी जगजीव जतीन की छूटी चटी। ख. जननी निरखति बान धनुहियाँ। बार-बार उर नैननि लावति प्रभुजू की ललित पनहियाँ। कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय वचन सवारे। ग. यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुतः इसको भी शक्ति दे दो यह दीप, अकेला, स्नेह भरा है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति दे दो।	6
10	**निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -** धर्म के रहस्य जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे, जो कहा जाए वही कान ढलकाकर, सुन ले, इस सत्ययुगी मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टांत बहुत तालियां पिटवाकर दिया जाता है। घड़ी समय बतलाती है। किसी घड़ी देखना जानने वाले से समय पूछ लो और काम चला लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वयं सीख लो किंतु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोल कर देखें, पुरजे गिन, उन्हें खोलकर फिर जमा दें, साफ करके फिर लगा लें - यह तुमसे नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं हैं। अथवा यदि समाज में मानव संबंध वही होते, जो कवि चाहता है, जो शायद उसे प्रजापति बनने की जरूरत न पड़ती। उसके असंतोष की जड़ ये मानव संबंध ही हैं। मानव-संबंधों से परे साहित्य नहीं है। कवि जब विधाता पर साहित्य रचता है, तब उसे भी मानव संबंधों की परिधि में खींच लाता है। इन मानव-संबंधों की दीवाल से ही हेमलेट की कवि सुलभ सहानुभूति टकराती है और शेक्सपियर एक	6

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	महान ट्रेंजडी की सृष्टि करता है। ऐसे समय जब समाज के बहुसंख्यक लोगों का जीवन इन मानव संबंधों के पिंजड़े में पंख फड़फड़ाने लगे, सींकचे तोड़कर बाहर उड़ने के लिए आतुर हो उठे, उस समय कवि का प्रजापति रूप और भी स्पष्ट हो उठता है। वह समाज के दृष्टा और नियामक के मानव-विहग से क्षुब्ध और रुद्र्ध स्वर को वाणी देता है। वह मुक्त गगन में गीत गाकर उस विहग के पैरों में नयी शक्ति भर देता है।	
11	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए -** (4+4) क. 'प्रेमधन की छाया-स्मृति' पाठ के आधार पर शुक्लाजी ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व की किन-किन विशेषताओं का वर्णन किया है? ख. 'लघुकथाएँ' पाठ के आधार पर शेर के मुँह और रोजगार के दफ्तर के मध्य क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए। ग. 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ में लेखक 'निर्मल वर्मा' ने गाँव के खेतों में क्या दृश्य देखा?	8
12	**सूर्यकांत त्रिपाठी निराला** अथवा **जयशंकर प्रसाद** का जीवन-परिचय, रचनाएँ तथा काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। अथवा **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** अथवा **रामविलास शर्मा** का जीवन-परिचय, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ तथा भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।	6
13	**किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** (3+3+3) क. 'सूरदास की झोंपड़ी' उपन्यास के प्रमुख पात्र 'सूरदास' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। ख. 'पर्यावरण संरक्षण' के लिए हमारा क्या दायित्व है? ग. 'आरोहण' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। घ. 'बिस्कोहर की माटी' पाठ किस रचना का अंश है?ग्रामीणों की किन-किन विषमताओं का वर्णन किया है?	9
14	**'आरोहण' पाठ के आधार पर 'पर्वतारोहण' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।** अथवा **'अपना मालवा' - पाठ के आधार पर-विकास की औद्योगिक समस्या उजाड़ की अपसभ्यता है, खाऊ-उजाड़ सभ्यता के संदर्भ में हो रहे पर्यावरण के विनाश पर प्रकाश डालिए।**	6

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

हिन्दी ऐच्छिक प्रतिदर्श प्रश्न पत्र-2

(अंक योजना)

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड 'क'	
1.	**शीर्षक :** परियोजना का स्वरूप।	1
2.	परियोजना शिक्षा का बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है। यह एक पूर्ण विचार योजना होती है। इसे तैयार करने में आनंद मिलता है।	2
3.	शैक्षिक परियोजना में संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए, चित्र इकट्ठे करके एक स्थान पर चिपकाए जाते हैं। इन नई-नई बातों की जानकारी दी जाती है।	2
4.	परियोजना हमें हमारी समस्याओं का निदान प्रदान करना है। इसे तैयार करने में हमें खेल जैसा आनंद मिलता है।	2
5.	परियोजना कई प्रकार से तैयार की जाती है। हर व्यक्ति इसे अपने ढंग से तैयार कर सकता है। परियोजनाएँ दो प्रकार की होती है : (क) समस्या का निदान करने वाले (ख) विषय की समुचित जानकारी देने वाली परियोजना।	2
6.	समस्या का समाधान करने वाली परियोजना में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और समस्या समाधान के सुझाव भी दिए जाते हैं।	2
7.	'परियोजना' शब्द 'परि' उपसर्ग के योग से बना है (परि+योजना)	1
8.	**विशेषण**	
	(i) शिक्षा - शैक्षिक	1
	(ii) संबंध - संबंधित	
9.	अखबारों में छपे अलग-अलग शहरों के दशहरे के चित्र इकट्ठे करके चिपकाना -फोटो फीचर परियोजना कहलाती है।	1
10.	**पर्यायवाची शब्द**	1
	(i) देश - मुल्क, वतन	
	(ii) दुनिया - जग, जगत	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
2.	**अपठित काव्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर**	
क.	भिन्न देशों की धरती का विभाजन करने वाले के लिए आकाश, हवा, पानी व आग का विभाजन करना असंभव है।	1
ख.	देशों की भिन्नता को महत्व न देने के लिए कहा गया है कि इस धरती पर आकाश, आग, पानी, हवा, सूर्य, चन्द्रमा तथा प्रकृति आदि एक है।	1
ग.	'अनल' का अर्थ है – आग तथा अनिल का अर्थ है – हवा तथा आग मनुष्य की संघर्ष शक्ति की परिचायक है।	1
घ.	कवि के विचार में, जन्मभूमि का विस्तार सारी धरती पर है। यह दूर-दूर तक फैला हुआ है।	1
ङ.	इस कथन का आशय है कि धरती पर एक ही प्रकृति है, पुरुष भी एक है, परन्तु उसके रूप भिन्न-भिन्न हैं।	1
	अथवा	
क.	जिस प्रकार पतंगा ज्योति में जलकर अपने प्राण दे देता है, उसी प्रकार मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपना जीवन नष्ट कर देता है।	1
ख.	**'विजयी'** शब्द का प्रयोग मगध व **'विजित'** शब्द का प्रयोग कलिंग के लिए किया गया है।	1
ग.	वास्तविक शासन सत्ता का नहीं, मन का है।	1
घ.	'महादंभ का दानव' 'अहंकार' को कहा गया है। जिसके कारण मनुष्य दूसरों को अपने अधीन रखना चाहता है।	1
ङ	**पर्यायवाची शब्द :** रवि – सूर्य शशि – चाँद	1
	खंड 'ख'	
3.	**किसी एक विषय पर 400 शब्दों में निबंध अपेक्षित है।**	**10**
	भूमिका	1
	विषय वस्तु का सुसम्बद्ध प्रतिपादन	6
	उपसंहार	1
	भाषा शुद्धता और अभिव्यक्ति शैली	2

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
क.	**कर्म ही पूजा है** व्यक्ति की सफलता के लिए कर्मठ होना आवश्यक है। उसे कर्म में ही विश्वास करना चाहिए। जिस व्यक्ति में आत्म-विश्वास है, वह व्यक्ति जीवन में कभी असफल नहीं हो सकता है, हाँ जो व्यक्ति हर बात के लिए दूसरों का मुँह ताकता है, उसे अनेक बार निराशा का सामना करना पड़ता है। अकर्मण्य व्यक्ति ही भाग्य के भरोसे बैठता है। कर्मवीर तो बाधाओं की उपेक्षा करते हुए अपने भुजबल पर विश्वास रखते हैं। उसके बारे में कविवर हरिऔध जी का कहना है – ''देखकर बाधा विविधि बहु विघ्न घबराते नहीं रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।'' केवल आलसी व्यक्ति ही सदैव दैव-दैव पुकारा करते हैं। आलसी लोगों का गुरूमंत्र है – ''अजगर करै न चाकरी, पंछी करे न काम दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।'' जीवन की सफलता केवल पुरुषार्थ में ही निहित है। स्वावलंबी व्यक्ति सदैव अपने भरोसे रहता है। वह तो असंभव को भी संभव बना देते हैं- ''पर्वतों को काटकर सड़के बना देते हैं वे सैकड़ों मरुभूमि में नदियां बहा देते हैं वे।'' विश्व का इतिहास ऐसे कर्मयोगियों से भरा पड़ा है, जिन्होंने कर्म में रत रहकर सफलता की उच्च सीमा को छू लिया। जो पुरुष उद्यमी एवं स्वावलंबी होते हैं, वे निश्चय ही सफल होते हैं। ''कायर मन कह एक अधारा, दैव-दैव आलसी पुकारा।'' कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी 'पुजारी, भजन, पूजन और साधन' कविता में बताया है कि देवालय में बैठना ईश्वर की सच्ची उपासना नहीं है। कवि की मान्यता है कि देवालय के किसी कोने में बैठकर पूजा करना व्यर्थ है। देवता देवालय में निवास नहीं करता है। जब पुजारी श्रमिकों के साथ पसीना बहाएगा तभी वह ईश्वर की सच्ची पूजा कर पाएगा। कर्म करके ही ईश्वर की उपासना हो सकती है, अत: किसान को मजदूरों के पसीने के साथ पसीना बहाना चाहिए। इसी से प्रभु प्रसन्न होते हैं।	
ख.	**आतंकवाद की समस्या और समाधान** आज विश्व आतंकवाद की समस्या से जूझ रहा है। आतंकवाद का सबसे क्रूर हमला सितम्बर 2001 में अमेरिका पर हुआ जिसने सारे विश्व को हिलाकर रख दिया। इसकी परिणति अफगानिस्तान के साथ	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	युद्ध से हुई। इस घटना के लिए ओसामा बिन लादेन को जिम्मेदार ठहराया गया, जिसके षड्यंत्र के फलस्वरूप अमेरिका के प्रसिद्ध 'ट्विन टावर' ध्वस्त हो गए और हजारों व्यक्तियों को जान से हाथ धोना पड़ा था। इसी घटना के फलस्वरूप अमेरिका को आतंकवाद का घिनौना चेहरा वास्तविक रूप में नजर आया। यद्यपि भारत उसे अनेक वर्षों से पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद के बारे में लगातार सूचित कर रहा था, लेकिन उसने इसे कभी गंभीरता से लिया ही न था। भारत गत् 15-20 वर्षों से आतंकवाद का दुष्प्रभाव झेल रहा हैं पहले पूर्वोत्तर भारत में तथा फिर एक दशक तक पंजाब इसका केन्द्र बना। वहाँ हजारों बेगुनाह व्यक्ति मारे गए। इस आतंकवाद में पंजाब के कुछ गुमराह युवक भी शामिल थे। सरकार के काफी प्रयासों के पश्चात् वहाँ शांति का वातावरण बना। अब वहाँ शांति है तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था पूरी तरह कार्य कर रही है। वर्तमान समय में आतंकवादी गतिविधियों के केन्द्र बदलते रहते हैं। जम्मू-कश्मीर में तो गतिविधियाँ चरम-सीमा पर हो ही रही हैं इसके साथ-साथ देश के अन्य हिस्सों को भी आतंकवादी अपना निशाना बना रहे हैं। 13 दिसम्बर 2001 को भारत की संसद पर इन आतंकवादियों ने हमला बोल दिया। हमारे सुरक्षाकर्मियों के साहस और सूझ-बूझ से बहुत बड़ा हादसा टल गया। इसमें 6-7 सैनिक शहीद हुए तथा आतंकवादी मारे गए। ये लोग अत्यंत सुनियोजित ढंग से आक्रमण करते हैं। मार्च 2002 में जम्मू के रघुनाथ मंदिर में दो आतंकवादी फिर घुस गए तथा सिंतम्बर 2002 में गुजरात के 'अक्षरधाम मंदिर को निशाना बनया गया। इसके पश्चात् 24 नवम्बर 2002 को रघुनाथ मंदिर में आतंकवादी घुस गए। इसमें 7 निर्दोष लोगों को जान गवानी पड़ी तथा 55 व्यक्ति घायल हुए। मथुरा के मंदिर भी उनको हिट लिस्ट में है। इस प्रकार आतंकवादी भारत की सांप्रदायिक एकता को भंग करने के प्रयास में जुटे हैं। आतंकवाद की समस्या पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। तदर्थवाद से काम चलने वाला नहीं है। आतंकवाद के नासूर का इलाज करना ही होगा। इस काम के लिए दृढ़संकल्प की आवश्यकता है। आतंकवाद देश की प्रगति की राह में सबसे बड़ा रोढ़ा है। यह हजारों लोगों की बलि ले चुका है। भारत के दो प्रधानमंत्री इसके शिकार हो चुके हैं। सन् शक्ति की एक सीमा होती है, इसके बाद यह कायरता कहलाती है। दिनकर जी ने ठीक कहा है - सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है। बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग जग है।	
ग.	**एक कामकाजी औरत की शाम** भारत एक कृषि प्रधान एवं गांवों का देश है। यहाँ के अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर रहते हैं, परन्तु शहर में जीवन यापन करने वाले लोग भी कम संख्या में नहीं है। जिस पर स्त्री-पुरुष दोनों मिलकर खेतों में काम करते हैं उसी प्रकार शहर के स्त्री-पुरुष दोनों ही अपने-अपने कार्यालयों में काम करते हैं, तभी शहरी जिंदगी सुचारू रूप` चल पाती है।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	भीड़-भीड़ वाले व्यस्त महानगर में प्रात: एवं सायं भागमभाग मची रहती है। शहर की महिलाएँ जैसे-तैसे भीड़ के चक्रव्यूह को तोड़कर कार्यालय पहुँचती है। दिन भर काम करके थकी हारी जब घर की ओर मुख करती हैं तब उन्हें रात के भय के कारण शीघ्रता करनी पड़ती है। भीड़ भरे चौराहे, ठसाठस भरी बसें, रेल गाड़ियाँ तथा ऑटो रिक्शे, क्या करें?कैसे चढ़े इनमें? आइए देखिए एक कामकाली औरत की बेचैनी एवं तनाव भरी शाम का दृश्य। बस स्टैंड पर चारों ओर भीड़, बस का इंतजार और अनेक चिंताएँ। लो आ गई बस, ठसाठस भरी। महिला इसमें सवार होने के लिए तैयार है। एक काँधे पर लटका पर्स तथा दूसरे हाथ में एक भरा थैला लटकाए जिसमें शाम की सब्जी, छोटे बच्चों के लिए बिस्कुट, टॉफी, पानी की खाली बोतल तथा खाली टिफिन कैरियर आदि दूसरे हाथ से बार-बार गाड़ी में चढ़ने का प्रयास करती है कभी गाड़ी आगे तो कभी स्वयं आगे निकल जाती है। कभी गाड़ी छूट जाती हे, तो कभी गाड़ी से हाथ छूट जाता है। जैसे-तैसे भागीरथ प्रयास करके गाड़ी में सवार हो जाती है। भीड़ में सभी ओर से दबी हुई अपने को बचाती हुई घर की व्यवस्था, रोटी, कपड़ा और मकान का चिंतन करती हुई धीरे-धीरे गाड़ी के अगले गेट तक आती है। इस बीच कभी उसकी चेन और कभी पर्स उसका चोरी कर लिया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक कामकाजी औरत नित्यप्रति इसी भागमभाग के साथ कार्यालय से अपने घर की ओर दौड़ती है जहाँ उसके बच्चे चिड़ियों के बच्चों की तरह चीं-चीं कर रहे होते हैं। फिर जुट जाती है उसी दैनिक प्रक्रिया में जो रोटी, कपड़ा और मकान से जुड़ी होती है धन्य है ऐसी औरत जो वीरांगना की तरह एक युद्ध नित्य प्रति जीतती है।	
घ.	**मानव अस्तित्व के लिए वृक्षारोपण आवश्यक** प्रकृति मानव की सच्ची सहचरी है, इसने मनुष्य के जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाया है। प्रकृति के आँगन का सबसे सुंदर अंग वृक्ष है। वृक्षों की महिमा को जानकर ही उसे परोपकार के उपमान के रूप में स्वीकार किया गया है। चिकित्सा के क्षेत्र में वृक्षों का अभूतपूर्व महत्व है। छोटे से तुलसी के पौधे में अनेक रोगों का उपचार करने की अद्भुत क्षमता निहित है। सृष्टि के निर्माण में वृक्षों की हरियाली की महिमा अवर्णनीय है। आज हमारे देश के सम्मुख कई समस्याएँ हैं, जैसे - प्रदूषण, जनसंख्या, आतंकवाद आदि। वायु प्रदूषण एक महत्वपूर्ण समस्या है। जंगलों का सफाया ही इस प्रदूषण का मुख्य कारण है। वृक्षों का मानव के अस्तित्व को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान है। वृक्ष ही अशुद्ध वायु अपने में लेकर शुद्ध वायु का विसर्जन करते हैं, ताकि मानव की श्वास-क्रिया बनी रहे। वायु-प्रदूषण को तभी रोका जा सकता हे, जब हम अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें। अधिक वृक्षों को लगाकर ही हम बाढ़ अथवा सूखे जैसी समस्याओं को रोक सकते हैं।। वन संरक्षण की नीति का पालन करते हुए कृषि अर्थव्यवस्था की रक्षा की जा सकती है। वनों के अविवेकपूर्ण व्यापारिक दोहन के फलस्वरूप जन-धन की महान क्षति हुई है। यदि हमें प्राकृतिक संतुलन और स्थायित्व को पुन: प्राप्त करना है तो वनों का विकास होना चाहिए न कि विनाश। इस संदर्भ में यह नारा बुलंद हुआ है -	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	''पेड़ लगाएँ स्वर्ग बनाएँ, धरती हिन्दुस्तान की हरी भरी हो यह वसुंधरा, मेरे देश महान की''।। पर्यावरण की रक्षा संबंधी यह चेतना परिसंवादों में होने वाले बुद्धि विलास की निष्पति मात्र नहीं है, बल्कि देश के कई भागों में हो रहे 'चिपकों', 'मुंबई बचाओ' और 'मूक घाटी बचाओ' जैसे परिस्थितिकीय जन-आंदोलन की फलश्रुति है। इन आंदोलन ने पर्यावरण के लिए पैदा खतरों को उजागर कर जनता को गलत नीतियों के खिलाफ उठ खड़ा होने के लिए प्रेरित किया और प्रतिरोध के शांतिमय आंदोलनों का रूप लिया। 'चिपको आंदोलन' पेड़ो से चिपके रहने की तथा उन्हें न काटने की अद्भुत मिसाल है। इस आंदोलन ने एक बुनियादी प्रश्न उठाया है कि, क्या जंगल की मुख्य पैदावार मिट्टी, पानी और प्राणवायु है या आज की प्रचलित सरकारी वन प्रबंध की कथित वैज्ञानिक नीति के अनुसार औद्योगिक कच्चा माल और लकड़ी है? क्या हम विदेशी पूँजी कमाने के लिए वन-संपदा का निर्यात कर विनाश की नियति तो नहीं गढ़ रहे हैं?यह देशद्रोह है। इसी प्रकार मुंबई के नागरिकों ने सड़कों और मकानों के विस्तार के लिए पेड़ों को काटने पर चुनौती दी और उन्होंने सांताक्रूज में लिविंग रोड पर पेड़ों की रक्षा की। यह चुनौती ही धीरे-धीरे अन्य राज्यों में फैल गयी तथा आम नागरिकों को अपनी वृक्ष-संपदा को बचाए रखने के लिए प्रेरित किया। यदि हम स्वाश्रयी और स्थायी विकास की नीतियों को अपनाने का दावा करते हैं और प्रकृति के साथ सामंजस्य की उपेक्षा करते हैं, तो एक दिन ऐसा जरूर आएगा, जब प्रकृति के धैर्य की सीमा टूट जाएगी। वह अपना प्रतिशोध बाढ़ और सूखे जैसी विनाशकारी, समस्याओं से लेगी। अतः हमें प्रकृति और मानव के क्रियाकलापों में एक सामंजस्य रखना होगा तथा कहना होगा - आओ हम सत्कार करें। पेड़ लगाकर धरती माँ का, हम अनुपम श्रृंगार करें। वृक्ष केवल हमारी जरूरत ही नहीं, बल्कि यह अपनी सुदंरता से पूरे वातावरण को स्वच्छ व मनोरम बनाए रखते हैं। इन्हीं से हमें दृढ़ इच्छाशक्ति की प्रेरणा मिलती है। वर्षा, आंधी के प्रकोप से भी पेड़ डरते नहीं और डट कर उनका सामना करते हैं। वृक्षों की हरियाली मनुष्य को सकारात्मक सोच तो देती ही है, साथ-साथ प्रसन्नता भी देती है। सरकार के साथ हमें भी मिलकर अधिक संख्या में वृक्षारोपण करना चाहिए। प्रकृति की इस अमूल्य देन को संभाल कर रखने से ही मानव जाति का अस्तित्व बना रहेगा। किसी ने ठीक ही कहा है - आओ मिलकर वृक्ष लगाएँ जीवन में खुशहाली लाएँ संकटों को हम दूर भगाएँ	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	प्रकृति से हम प्रेम बढ़ाएँ।	
4.	**पत्र लेखन**	**5**
	पत्र का प्रारूप - औपचारिकताएँ	2
	विषय वस्तु का प्रतिपादन	2
	भाषा की शुद्धता	1
	सेवा में, श्रीमान् पुलिस-कमिश्नर महोदय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली विषय- **दिन-प्रतिदिन बिगड़ती कानून व्यवस्था की समस्या के समाधान हेतु।** मान्यवर, विनम्रता पूर्वक निवेदन यह है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में कानून एवं सामाजिक नियमों एवं आदर्शों की स्थिति दिनों-दिन बिगड़ती जा रही है। असामाजिक तत्व खुले आम हथियार लेकर लूट-पाट, हत्या, अपहरण तथा बलात्कार जैसी घिनौनी हरकतों में लिप्त हो रहे है। कानून का खौफ किए बगैर वे अपनी धृष्टता का परिचय देते हुए दर्दनाक घटनाओं को अंजाम देते रहते हैं। कानून हर समय उनकी मुट्ठी में रहता है। सामाजिक नियमों की परवाह होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसे में समाज के सभ्य, शिष्ट एवं भोले-भाले लोगों विशेषकर महिलाओं का जीवन कष्टपूर्ण एवं भयपूर्ण हो गया है। पहले तो इनकी शिकायत करने पर हत्या होने या अंजाम भुगतने का डर बना रहता है, दूसरे यदि कोई साहस करके इनकी शिकायत करने क्षेत्रीय पुलिस कार्यालय जाता है तो वहाँ शिकायत ही नहीं लिखी जाती। ऐसे में हम सभी लोग असहाय होकर लौट आते हैं। 'परित्राणाय साधूनाम' तथा 'हम हैं आपके साथ सदैव' वाली सुंदर उक्तियाँ भ्रामक एवं दिखावा-सी प्रतीत होने लगी है। अत: आपसे निवेदन है कि अपने अधीनस्थ अधिकारियों को सख्त आदेश देकर दिल्ली जैसे सुंदर एवं विश्व विख्यात शहर को इन असामाजिक तत्वों से मुक्त कराने की कृपा करें। सधन्यवाद! भवदीय मनीष शर्मा अध्यक्ष, क्षेत्र सुधार समिति क.ख.ग. पुरम्, दिल्ली दिनांक	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	अथवा	
4.	सेवा में कार्यपालक अभियंता विद्युत बोर्ड, पीतमपुरा, नई दिल्ली–110088 विषय: **बिजली के खराब मीटर की शिकायत हेतु।** महोदय, इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान अपने बिजली के मीटर की ओर दिलाना चाहता हूँ। मैं पीतमपुरा का निवासी हूँ। विगत तीन महीने से मेरे मकान में लगा बिजली का मीटर बंद पड़ा है। इसके विषय में मैने मीटर रीडर से अनेक बार रिपोर्ट की है, लेकिन उन्होंने कोई कार्यवाही नहीं की। अनुमान के आधार पर ही विद्युत बोर्ड की ओर से बिल भेद दिया जाता है जिसे मैं जमा करवा देता हूँ, लेकिन वास्तव में मेरे घर में बिजली की खपत कितनी होती है, इसका आकलन सही नहीं हो पा रहा है। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस मीटर को ठीक करवाने की व्यवस्था करवाएँ क्योंकि मैं अनुमानित व्यय वहन करने में असमर्थ हूँ। मेरे पत्र के साथ गत तीन महीनों के बिलों की प्रतियाँ संलग्न हैं। धन्यवाद! भवदीय (हस्ताक्षर ....) मधुर दत्ता क.ख.ग. नगर, दिल्ली दिनांक :.....................	
5.	मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समष्टि रूप में समाज, देश, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त भावों, विचारों, सूचनाओं का आदान–प्रदान करने के लिए कुछ माध्यमों की आवश्यकता पड़ती है। जिन माध्यमों द्वारा सूचनाओं व विचारों को जनता तक पहुँचाया जाता है, उन्हें जनसंचार माध्यम की संज्ञा दी जाती है। जनसंचार के माध्यमों में इंटरनेट एक सशक्त माध्यम है। इंटरनेट संसार का सबसे नवीन, लोकप्रिय माध्यम है। यह एक ऐसा माध्यम है, जिसमें प्रिंट माध्यम, रेडियो, टेलीविजन, पुस्तक, सिनेमा, पुस्तकालय सभी के गुण समाहित हैं। इंटरनेट ने संचार की नवीन संभावनाएँ व अनुसंधान के नए मार्ग प्रशस्त किए हैं।	**5**

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	इंटरनेट पर समाचार-पत्र का प्रकाशन ही इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है। यह दो रूपों में होती है। इंटरनेट के स्वरूप व विकास के आधार पर इसका समय (काल) विभाजन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है – (i) प्रथम चरण का समय सन् 1982 से 1992 तक (ii) द्वितीय चरण का समय सन् 1993 से 2001 तक (i) तृतीय चरण का समय सन् 2002 से अब तक भारत में इंटरनेट दूसरे चरण पर है। भारत में इसका पहला चरण 1993 से तथा दूसरा चरण 2003 से शुरू माना जा सकता है। वर्तमान समय में पत्रकारिता की दृष्टि से 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'टाइम्स ऑफ इंडिया','इंडियन एक्सप्रेस', 'हिंदू', थ्टव्यून, स्टेट्समैन, पॉयनियर, एनडीटीवी, जी न्यूज, तथा आज तक की साइटें श्रेष्ठ व उपलब्ध हैं। भारत में अपने पूर्ण सामर्थ्य के साथ तीन साइटों ने वेब पत्रकारिता के रूप में अपने कदम जमाए हैं – रीडिफ डॉटकॉम, इंडियाइंफोलाइन व सीफी। रीडिफ भारत की प्राइम साइट है, जो विशुद्ध पत्रकारिता करने का श्रेय प्राप्त कर चुकी है। हिन्दी में नेट पत्रकारिता का प्रारंभ वेब दुनिया के साथ हुआ। प्रभासाक्षी समाचार-पत्र प्रिंट रूप में उपलब्ध नहीं है। यह केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता की दृष्टि से हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी है। हिन्दी वेब संसार में 'अनुभूति' 'अभिव्यक्ति', हिन्दी नेस्ट तथा सराय जैसी पत्रिकाएँ उच्च कोटि का कार्य कर रही हैं। हिन्दी वेब पत्रकारिता में सबसे बड़ी बाधा हिन्दी के फौंट की है। आज तक कोई एक मानक 'की-बोर्ड' निर्मित नहीं हो पाया हैं डायनमिक फौंट के अभाव में अधिकतर हिन्दी की साइटें खोलने में हम नहीं हो पाते। जब तक की-बोर्ड का मानकीकरण नही होगा, तब तक हमें ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अथवा पत्रकारिता के विकास में जिज्ञासा का भाव प्रबल होता है। इसका संबंध समसामयिक और वास्तविक घटनाओं व समस्याओं से है। इसका मुख्य उद्देश्य पाठकों को समाज, देश तथा विदेश में हो रही गतिविधियों का परिचय देकर जागरूक बनाना है। इसके प्रमुख सिद्धान्त हैं – तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता, संतुलन एवं स्रोत। पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार हैं – खोजपरक पत्रकारिता, विशेषीकृत – पत्रकारिता, वाचडॉग पत्रकारिता, एडवोकेसी पत्रकारिता तथा वैकल्पिक पत्रकारिता। पत्रकारिता में साक्षात्कार लेने हेतु पत्रकार यह सुनिश्चित करता है कि किस व्यक्ति विशेष से क्या-क्या बातें करनी हैं और वह उनके उत्तर क्या देता है। इससे जनता में उसके प्रति बनी भावना या दुर्भावना	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	का स्पष्टीकरण हो जाता है। इस साक्षात्कार शैली से व्यक्ति विशेष के मनोभावों को प्रश्नोत्तर शैली में जन-जन तक पहुँचाकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया जाता है।	
	पत्रकारिता पारदर्शक होती है और होनी भी चाहिए। इसके वाहक यथार्थ को जन-सामान्य तक पहुँचाते है। ऐसी पारदर्शक तथा यथार्थ के धरातल पर खड़ी पत्रकारिता की अपनी एक साख बन जाती है, जो साक्षात्कार में विश्वास प्राप्त कर लेती है। पत्रकारिता की इस साख को बनाए रखने के लिए पाठक या श्रोताओं को सत्य घटना से साक्षात्कार कराना चाहिए। इसमें मनगढंत चुटीली खबरों से बच जाते हैं, दूसरे अपने ग्राहकों के ज्ञान विज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन से संबंधित उनकी जरूरतों का ध्यान रखा जा सकता है। इसकी भाषा-सहज, सरल, रोचक व प्रभावशाली होती है।	
6	(i) विज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही भारत की दो संस्थाओं के नाम निम्नलिखित हैं –	1
	(क) डिफेंस रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट ऑर्गनाइजेशन।	
	(ख) सेंट्रल स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन	
	(ii) रेडियो समाचर की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –	1
	(क) रेडियो समाचार मूलतः एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है।	
	(ख) रेडियो समाचार लेखन की संरचना उलटा पिरामिड शैली पर आधारित है।	
	(iii) भारत में प्रथम छापाखाना सन् 1556 में, गोवा राज्य में खुला था।	1
	(iv) फीचर के दो प्रकार निम्नलिखित हैं –	1
	(क) खोजपरक फीचर	
	(ख) व्यक्ति चित्र फीचर	
	(v) पत्रकारों के दो प्रकारों के नाम निम्नलिखित हैं –	1
	(क) पूर्णकालिक पत्रकार	
	(ख) अंशकालिक एवं स्वतंत्र पत्रकार	
7	1947 .... रह सकते हो।	**8**
	काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या	
	संदर्भ – कविता और कवि का नाम	1
	कविता का प्रसंग	1
	व्याख्या – व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण	4

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	विशेष – काव्य पंक्तियों की शिल्पगत विशेषताओं का उल्लेख	1
	भाषा शुद्धता और अभिव्यक्ति शैली	1
	<u>प्रसंग</u> – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित विष्णु खरे की कविता 'एक कम' से अवतरित हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्वाधीनता के बाद भारतीय समाज में प्रचलित हो रही जीवन शैली को रेखांकित किया है। इससे पूरे देश का या कहें कि आस्थावान, ईमानदार और संवेदनशील जनता का मोहभंग हुआ है। आपसी विश्वास, भाईचारे का स्थान धोखाधड़ी और आपसी खीचतान ने ले लिया हैं ऐसे माहौल में कवि स्वयं को असमर्थ पाते हुए भी ईमानदारों के प्रति अपनी सहानुभूति स्पष्ट रूप से रखता है। वह किसी के जीवन-संघर्ष में बाधक नहीं बनना चाहता। इस प्रकार वह कम से कम एक व्यवधान तो कम कर सकता है।	
	<u>व्याख्या</u> – कवि कहता है कि मैंने 1947 के बाद (स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद) बहुत से लोगों को अपने-अपने तरीकों से आत्म-निर्भर होते देखा है। वे लोग गलत हथकंडे अपनाकर मालामाल हो गए हैं। मैंने उन्हें उन्नति के पथ पर आगे बढ़ते देखा है। लोगों ने आर्थिक संपन्नता के लिए झूठ, छल-कपट, बेईमानी, धोखाधड़ी आदि का रास्ता अपना लिया। चारों ओर स्वार्थपरता का वातावरण बनता चला गया।	
	इस माहौल में ईमानदार लोग दूसरों के आगे हाथ फैलाने को विवश हो गए हैं। जब कोई पच्चीस पैसे, एक चाय या दो रोटी के लिए हाथ फैलाता है, तब मैं जान लेता हूँ कि मेरे आगे हाथ फैलाने वाला व्यक्ति ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा खड़ा है। उसके हाथ फैलाने में यह स्वीकार करने का भाव है कि मैं विवश हूँ, एक कंगाल या कोढ़ी हूँ। अथवा यह भाव होता है कि मैं अच्छा भला स्वस्थ हूँ कामचोर और एक साधारण धोखेबाज हूँ। तात्पर्य यह है कि भीख माँगने वाला या तो वास्तव में अत्यंत लाचार होता है अथवा स्वस्थ होते हुए भी कामचोर या छोटा-मोटा धोखेबाज हो सकता है। पर वह अपना असली रूप बिना किसी धोखे के प्रकट कर देता है। कवि कहता है कि उस याचक के मन में यह स्वीकृति का भाव भी होता है कि मैं पूर्ण रूप से तुम्हारे संकोचपूर्वक या लज्जा के साथ अथवा परेशान होकर या क्रोधित होकर दिए गए दान के सहारे ही जीवित हूँ अथवा उसका जीवन दूसरों के दान पर ही निर्भर है, चाहे दान देते समय मनुष्य के मन में कैसी भी भावना रही हो।	
	इस तरह हाथ फैलाते हुए वह यह भाव प्रकट कर देता है कि मैंने तुम्हारे सामने, आत्मसम्मान को खो दिया है, मैंने लज्जा का भी त्याग कर दिया है और मैंने सारी आकांक्षाओं को भी छोड़ दिया है। इस प्रकार मैंने हर प्रतिस्पर्धा से स्वयं को हटा लिया है। मैं तुम्हारा विरोधी, प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं हूँ अर्थात् धन कमाने की लालसा, उन्नति के रास्ते से स्वयं को हटा लिया है। मैं तुम्हारी राह का बाधक नहीं हूँ। तुम चाहे कुछ दो या न दो परन्तु कम से कम एक आदमी से तो चिंतामुक्त रह सकते हो अर्थात् तुम्हें मुझसे कोई खतरा नहीं है।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	विशेष – • आजादी के बाद की स्थिति से मोहभंग हुआ है। • व्यंजना शक्ति का प्रयोग हुआ है। • पच्चीस पैसे, कंगाल या कोढ़ी, नंगा निर्लज्ज, हर होड़ में अनुप्रास अलंकार है। • शब्द–चयन अत्यंत सटीक है। • कविता मुक्त छंद में है। अथवा प्रसंग – प्रस्तुत सवैया हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग–2 के अंगत नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता केशवदास जी है। इस सवैया में भगवान राम के प्रताप से अनभिज्ञ रावण को उसकी पत्नी मंदोदरी अनेक उदाहरण देकर समझा रही है कि राम महाप्रतापी राजा है उनसे शत्रुता मत करो। व्याख्या – रावण की पत्नी रावण को समझाती तथाश्रीराम के प्रताप का वर्णन करती हुई कहती है कि श्री राम के सेवक हनुमान ने इस बड़े समुद्र को लाँघ लिया था परन्तु तुम से लक्ष्मण द्वारा खींची गई एक रेखा तक नहीं लाँघी गई। तुम बंदर (हनुमान) को बाँधना चाहते थे, परन्तु तुम से वह भी नहीं बाँधा जा सका, जबकि श्री राम के बंदरों ने सागर को बाँध कर,पुल बनाकर रास्ता बना लिया था। मंदोदरी कहती है कि हे दसकंठ रावण! इतना सब कुछ होने पर भी तुम्हें श्रीराम के प्रताप की बात मालूम नहीं पड़ सकी है। तुम तेल और कपड़ों से उस बानर की पूँछ में आग लगाना चाहते थे, वह भी नहीं हो सका उलटे वह पूँछ लंका को ही जला गई। भाव–सौंदर्य – श्री रघुनाथ जी का प्रताप और उनके गुणों को मंदोदरी समझ चुकी थी। वह रावण से शत्रुता त्याग कर समझौता कर लेने में ही भलाई समझने लगी थी। इस सवैया में उसने रावण को यही समझाया है। शिल्प–सौंदर्य 1. अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है। 2. जरी–जतरी में यमक अलंकार है। 3. सवैया छंद है। 4. लक्षणा शब्द शक्ति है। 5. ब्रजभाषा है।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
8	दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित (3+3)	6
क.	सत्य की पहचान के लिए उसे हम अपनी आत्मा में खोजें। सत्य के प्रति संशय का विस्तार होने के बावजूद वह हमारी आत्मा की आंतरिक शक्ति है। हमें निरंतर परिवर्तनों को दृष्टि में रखते हुए सत्य की पहचान करने का प्रयास करना चाहिए। वैसे सत्य का कोई स्थिर रूप या पहचान नहीं है। हमारी अंर्तआत्मा ही सत्य की पहचान कराती है।	
ख.	इस पंक्ति का मर्म यह है कि राम का स्मरण करके माता कौशल्या चित्रवत् मनः स्थिति में आ जाती है। वह इधर-उधर हिलती-डुलती तक नहीं। वह चकित-सी रह जाती है। जिस प्रकार चित्र में कोई आकृति स्थिर रहती है, वही दशा कौशल्या की हो गई। जो कौशल्या अभी तक रामकी वस्तुओं को देखकर और राम के बचपन का स्मरण करके मुग्धावस्था में थी, वही राम के वन-गमन को याद करके स्थिर चित्र-सी हो जाती है।	
ग.	'सरोज-स्मृति' कविता एक शोक - गीत है। इसमें कवि अपनी दिवंगत पुत्री सरोज की आकस्मिक मृत्यु पर शोक प्रकट करने के साथ-साथ अपनी विवशता को प्रकट करता है। वह स्वयं को एक पिता के रूप में अकर्मण्य पाता है। वह पुत्री के प्रति कुछ भी न कर पाने को कोसता है। इस कविता के माध्यम से कवि का अपना जीवन-संघर्ष भी प्रकट हुआ है। पिता के रूप में कवि के विलाप में उसे कभी शकुंतला की याद आती है तो कभी अपनी स्वर्गीया पत्नी की। उसे पुत्री के रंग-रूप में अपनी पत्नी के रंग-रूप की झलक मिलती है। कवि पुत्री का पालन-पोषण स्वयं नहीं कर पाया। इसके लिए उसे अपनी ससुराल (सरोज की नानी, मामा-मामी) की शरण में जाना पड़ा। यह भी कवि के मानसिक दु:ख का कारण है। कवि का समस्त जीवन दु:ख की कथा बनकर रह गया और वह उसे कहने में असमर्थता का अनुभव करता है।	
9	**किन्हीं दो का काव्य सौंदर्य अपेक्षित** (3+3) भाव-सौंदर्य शिव्य-सौंदर्य	6
क.	यहाँ लक्ष्मण द्वारा पंचवटी के महात्म्य का सुंदर वर्णन किया गया है। लक्ष्मण पंचवटी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि इस पंचवटी के समीप आते ही दु:ख की चादर फट जाती है अर्थात् सारे दु:ख दूर हो जाते हैं। यहाँ पर कपटी व्यक्ति घड़ी भर नहीं ठहर सकता क्योंकि इसकी अपार शोभा के कारण उसके भाव भी सात्विक हो जाते हैं। यहाँ आकर जगत के प्राणियों की मृत्यु के प्रति रुचि घट जाती है अर्थात् यहाँ आकर कोई भी मरना नहीं चाहता, क्योंकि पंचवटी का सौंदर्य देखकर मनुष्य को अपार आनंद मिलता है। यहाँ तो योगियों की योगावस्था छूट जाती है। इसका कारण यह है कि योग-साधना में जिस प्रकार का आनंद प्राप्त होता है, उससे भी अधिक आनंद पंचवटी के सौंदर्य को निहारने में मिल जाता है। विशेष: 1. पंचवटी की शोभा का मनोहारी चित्रण किया गया है। 2. अलंकार : अनुप्रास, उपमा, रूपक	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	3. भाषा : ब्रज 4. रस : शांत 5. गुण : प्रसाद ख. जननी .... सवारे। भाव-सौंदर्य : माता कौशल्या राम के बचपन की चीजों को देखकर और स्मरण करके अत्यंत व्याकुल हो जाती हैं। ये चीजें उनकी वेदना को बढ़ाने में उद्दीपन का काम करती हैं। वे श्रीराम के बचपन के छोटे-छोटे धनुष बाण को देखती हैं। श्रीराम की शैशवकालीन जूतियों को देखकर उन्हें बार-बार अपने हृदय और नेत्रों से लगाती हैं। वे यह भूल जाती हैं कि अब उनके पुत्र श्रीराम यह नहीं हैं और वे पहले की तरह प्रिय वचन बोलती हुई राम के शयन कक्ष में जाती हैं और उन्हें जगाते हुए कहती हैं – हे पुत्र। उठो। तुलसीदास जी का कहना है कि माता कौशल्या की इस स्थिति का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। उनकी दशा तो उस मोरनी के समान है जो प्रसन्न होकर नाचती रहती हैं पर जब अंत में वह अपने पैरों की ओर देखती हैं तो रो पड़ती हैं। यही दशा कौशल्या का है। विशेष: 1. माता कौशल्या की अर्धविक्षिप्तावस्था का मार्मिक चित्रण हुआ है। 2. वात्सल्य रस का प्रभावी चित्रण है। 3. बार-बार में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार हैं। 4. ब्रज भाषा का प्रयोग है। ग. काव्य-सौंदर्य भाव-सौंदर्य : इन पंक्तियों में कवि ने व्यक्ति के प्रतीक के रूप में दीपक को लिया है। यह बताया गया है कि यह दीपक प्रकृति के अनुरूप है, स्वाभाविक रूप से स्वयं उत्पन्न हुआ है। यह ब्रह्म अर्थात् सच्चिदानंद स्वरूप जगत का मूल है। यह 'अयुत' अर्थात् सबसे पृथक (अलग) अस्तित्व वाला है। दीपक के प्रतीक के द्वारा बताया गया है कि व्यक्ति अपने आप में परिपूर्ण एवं सर्वगुण संपन्न है, पर पंक्ति यासमाज में विलय होने पर इसकी सार्थकता एवं उपयोगिता बढ़ जाएगी। यह उसकी सत्ता का सार्वभौमीकरण है – व्यष्टि का समष्टि में विलय है, आत्मबोध का विश्व बोध में रूपांतरण है। शिल्प-सौंदर्य – इन पंक्तियों में दीप की उपमा अनेक वस्तुओं से दी गई है। प्रतीकात्मकता का समावेश है। दीपक व्यक्ति का तथा 'पंक्ति' समाज का प्रतीक है। लाक्षणिकता का प्रयोग दर्शनीय है।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	'स्नेह' शब्द में श्लेष अलंकार है।	
	तत्सम शब्दों का प्रयोग है।	
10	गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या	**6**
	संदर्भ –पाठ और लेखक का नाम	1
	पूर्वापर संदर्भ	1
	व्याख्या –प्रमुख व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण	3
	विशेष –विशेष टिप्पणी और भाषा शैली गत विशेषताओं का उल्लेख	1
	धर्म के रहस्य .... नहीं है।	
	प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित लघु निबंध 'सुमिरिनी के मनके' शीर्षक के अंतर्गत संकलित किया गया है। इसमें लेखक ने धर्म के रहस्य को जानने पर धर्म उपदेशकों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को घड़ी के दृष्टांत द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।	
	व्याख्या – धर्माचार्यों का कथन होता है कि प्रत्येक मनुष्य को धर्म के रहस्य के जानने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। यह रहस्य अत्यंत गूढ़ है अत: इसे उन्हीं तक (धर्माचार्यों तक) ही सीमित रहना ठीक है। (क्योंकि वे स्वयं को धर्म का ठेकेदार मानते हैं।) सामान्य लोगों के लिए तो इतना ही काफी है कि उन्हें धर्म के बारे में जितना बताया जाए उसी को कान में ढालकर सुन लें, ज्यादा की इच्छा न करें, अर्थात् धर्माचार्य जितना बताना चाहें, वही उनके लिए पर्याप्त हैं। लोग उनकी बातों पर तालियाँ पीट दें, यह काफी है। लेखक यहाँ घड़ी की दृष्टांत (उदाहरण) देता है। घड़ी समय बताती है, धर्माचार्य भी धर्म के बारे में बताते हैं। यदि आपको घड़ी देखना न आता हो तो किसी अन्य घड़ी देखना जानने वाले से समय बताती है, धर्माचार्य भी धर्म के बारे में बताते हैं। यह काम घड़ीसाज ही कर सकता है। यही उदाहरण वेद-शास्त्र के ज्ञाता धर्माचार्य अपने पक्ष को सही सिद्ध करने के लिए देते हैं। आम आदमी को तो धर्म की जानकारी धर्माचार्यों से ही लेनी चाहिए। उन्हें जिस प्रकार घड़ी के पुर्जों से मतलब नहीं उसी प्रकार धर्म के रहस्यों से भी मतलब नहीं होना चाहिए।	
	विशेष :	
	1. लेखक ने घड़ी का दृष्टांत देकर धर्माचार्यों पर करारा व्यंग्य किया है।	
	2. लेखक ने रोचक एवं सुबोध शैली का अनुसरण किया है।	
	अथवा	
	यदि .... भर देता है।	
	प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'रामविलास शर्मा' द्वारा रचित ''यथास्मै रोचते विश्वम्'' से अवतरित हैं। इसमें लेखक ने कवि की निर्माणकारी भूमिका पर प्रकाश डाला है।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	व्याख्या : लेखक बताता है कि कवि तो प्रजापति के समान समाज का नव-निर्माण करता है। समाज में मानव-संबंध वैसे नहीं है जैसे कवि चाहता है। इन संबंधों को सुधारने के लिए प्रतापति के दायित्व का निर्वाह करना पड़ता है। समाज की वर्तमान स्थिति के प्रति उसके मन में असंतोष रहता हैं साहित्य की रचना के मूल में ये मानव-संबंध ही होते हैं। कवि तो विधाता तक को नहीं बख्शता। साहित्य-सृजन करते समय वह विधाता को भी मानव-संबंधों के दायरे में खींच लाता है। ऐसी दशा में कवि का प्रजापति रूप मुखरित हो उठता है। तब कवि समाज के भविष्य को देखने वाला बनकर तथा नियामक के रूप में जनसाधारण के मन में शासक वर्ग के प्रति उत्तेजक आक्रोश को वाणी देता है। जो लोग शासन के भयवश अपनी बात नहीं कह पाते, वह (कवि) उन्हें प्रेरणा देकर उत्साहित करता है। वह स्वतंत्रता के गीत गाकर प्रेरणा देता है तथा मानव रूपी पक्षी के पैरों में नया उत्साह भर देता है। इस प्रकार उसका प्रजापति रूप उभर आता है। **विशेष :** 1. लेखक ने कवि की प्रजापति वाली भूमिका की आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला है। 2. तत्सम शब्द प्रधान भाषा का प्रयोग किया गया है। 3. शैली में काव्यात्मकता का गुण है।	
11	**दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** (3+3)	6
क.	शुक्ल जी ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व को बहुमुखी प्रतिभा का धनी बताया हैं वे एक रईस परिवार के थे और उनकी हर अदा से बडप्पन झलकता था। कंधों पर उनके बाल उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगा रहे थे। उनकी वाणी में विलक्षण बाँकपन था। कवि वामनाचार्य गिरि जी ने चौधरी साहब के बालों से प्रेरणा लेकर कविता पूरी कर दी थी। चौधरी साहब विनोदी स्वभाव के भी थे। उन्हें बाल रखने का बड़ा शौक था। वे बातचीत की कला में बहुत कुशल थे। वे अपने घर में देशज भाषा में बतियाते थे। उनका पूरा नाम चौधरी प्रेमधन था, जो हिन्दी जगत में अपनी साहित्य और व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ गए।	
ख.	शेर के मुँह के अंदर जो भी जंगली जानवर एक बार जाता है, उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। वह वहाँ से पुनः लौटकर कभी नहीं आता। आधुनिक रोजगार कार्यालय (दफ्तर) में लोग नौकरी (रोजगार) की आशा में वहाँ चक्कर काटते रहते हैं, परन्तु उन्हें वहाँ से कभी नौकरी नहीं मिलती। पर इतना अंतर अवश्य है कि रोजगार दफ्तर उन्हें शेर के मुँह की भाँति निगलकर उनका अस्तित्व समाप्त कर देता है।	
ग.	वहाँ जो पानी भरा हुआ था बाढ़ नहीं, पानी में डूबे धान के खेत थे। वे थोड़ी सी हिम्मत बटोरकर गाँव के भीतर चले, तब वे औरतें दिखाई दी जो एक पाँत में झुकी हुई धान के पौधे छप-छप पानी में रोप रही थी। सुंदर, सुडौल, धूप में चमचमाती काली टाँगें और सिरों पर चटाई के किश्तीनुमा हैट, जो फोटो या फिल्मों में देखे हुए वियतनामी या चीनी औरतों की याद दिलाते थे। जरा-सी आहट पाते	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	ही वे एक साथ सिर उठाकर चौंकी हुई निगाहों से उन्हें देखा – बिल्कुल उन युवा हिरणियों की तरह, जिन्हें लेखक ने एक बार कान्हा के वन्यस्थल में देखा था।	
12	**किसी एक लेखक अथवा कवि का जीवन परिचय अपेक्षित है-**	**6**
	(i) संक्षिप्त जीवन-परिचय	2
	(ii) रचनाओं के नामों का उल्लेख, साहित्यिक योगदान	2
	(i) दो काव्यगत अथवा भाषा शैलीगत विशेषताओं का स्पष्टीकरण	2
	सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला' **जीवन परिचय** – सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 ई. में बंगाल में मेदिनीपुर जिले के महिषादल राज्य में हुआ था। इनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी महिषादल राज्य में सामान्य कर्मचारी थे। चौदह वर्ष की आयु में 'निराला' का विवाह मनोहरा देवी से हुआ, किन्तु उनका पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं रहा। इन्होंने दुख को अत्यंत निकट से देखा। सन् 1918 में पत्नी की मृत्यु हो गई और उसके बाद पिता, चाचा और चचेरे भाई एक-एक कर चल बसे। अंत में प्रिय पुत्री सरोज की मृत्यु ने तो उनके हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इस प्रकार 'निराला' जीवन भर क्रूर परिस्थितियों से संघर्ष करते रहे। सन् 1961 में उनका देहांत हो गया। **काव्यगत विशेषताएँ** – सन् 1916 में निराला जी की प्रसिद्ध कविता 'जुही की कली' लिखी गई। निराला जी मुक्त छंद के प्रवर्तक माने जाते हैं। निराला का प्रारंभिक रूप छायावादी है। बाद में वे प्रगतिवादी कविताएँ लिखने लगे। उनमें भारतीय इतिहास, दर्शन और परंपरा का व्यापक बोध है। उन्होंने जीवन के यथार्थ के विभिन्न पक्षों का चित्रण अत्यंत कुशलता पूर्वक किया है। भारतीय किसान जीवन से उनका विशेष लगाव रहा है। **भाषा-शैली** – निराला की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ है जिसमें संधि -समास युक्त विविध जाति तथा ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। उनमें संगीत का स्वर भाषा के प्रवाह को और अधिक गति प्रदान करता है तथा सजग शब्द-चयन भाषा में चित्रात्मकता उत्पन्न करता है। वाक्यों में कसाव, शब्दों में मितव्ययिता और अर्थ-सघनता उनकी काव्य-भाषा की विशेषताएँ हैं। शिल्प के क्षेत्र में भी उनका विद्रोही रूप व्यक्त हुआ है। विषयवस्तु के साथ-साथ शिल्प के स्तर पर भी उन्होंने विद्रोह का स्वर बुलंद किया है। उन्होंने परंपरागत छंदों के बंधनों को तोड़कर मुक्त छंद की घोषणा की। एक ओर उन्होंने साहित्य में बंधनों का विरोध किया तो दूसरी ओर जीवन में सामंती रूढ़ियों और साम्राज्यवादी वृत्तियों का डटकर सामना किया। इस प्रकार निराला ने वीरत्व-व्यंजक स्वच्छंदतावादी भाव-बोध को व्यक्त किया है। शब्दों की मितव्ययता उनके काव्य में मिलती है। **रचनाएँ** – अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, नए पत्ते, बेला, अर्चना, अराध ना तथा गीतगुंज उनकी काव्य-कृतियाँ है। काव्य के अतिरिक्त उन्होंने गद्य-साहित्य में भी अपना योगदान दिया है।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	अथवा **<u>जयशंकर प्रसाद</u>** **जीवन-परिचय :** जयशंकर प्रसाद का जन्म उत्तर प्रदेश के काशी (वाराणसी) नामक स्थान पर सन् 1888 ई. में हुआ था। इन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी, पाली तथा उर्दू भाषा तथा साहित्य का स्वाध्याय द्वारा गहन अध्ययन किया। इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र एवं पुरातत्व आदि विषयों के ये प्रकांड पंडित रहे थे। प्रसाद जी दूसरों की निंदा तथा अपनी प्रशंसा से सदैव दूर रहते थे। इनका स्वभाव शांत एवं गंभीर था। ये अत्यधिक प्रतिभाशाली थे। मूल रूप से कवि होने के साथ-साथ इन्होंने नाटक, उपन्यास, निबंध एवं कहानियों जैसी गद्य की अन्य विधाओं में भी साहित्य को योगदान दिया। सन् 1937 ई. में इनकी मृत्यु हो गई। **काव्य रचनाएँ :** (क) महाकाव्य: कामायनी (ख) खण्डकाव्य: आँसू प्रेमपथिक और महाराणा का महत्व (ग) काव्यरूपक : करूणालय (घ) चम्पू-काव्य : उर्वशी (ङ) गीति-काव्य: कानन-कुसुम, चित्राधार, झरना और लहर। **नाटक :** सज्जन, कल्याणी, स्कंदगुप्त, चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु आदि **उपन्यास :** कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण) **कहानी-संग्रह :** छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इन्द्रजाल **निबंध - संग्रह :** काव्य और कला तथा अन्य निबंध **काव्य-शिल्प :** प्रसाद जी के काव्य का शिल्प-विधान अत्यंत सक्षम है। उनका शब्द-चयन तथा वाक्य-विन्यास मनोहर है। लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता तथा चित्रात्मकता उनकी काव्य-भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। प्रसाद जी की कविताओं से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं। अनलशिखा, रक्तिम, क्रंदन-ध्वनि, निर्दयता, महादंभ का दानव तुरंग आदि। **अलंकार-विधान :** प्रसाद जी ने छायावादी काव्य-शैली के अनुरूप मानवीकरण का अधिक प्रयोग किया है। वैसे संकलित कविताओं में रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकार भी पर्याप्त रूप में प्रयुक्त हुए हैं। उदाहरणार्थ - **मानवीकरण** - 'मिले चूमते जब सरिता के	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	हरित कूल युग मधुर अधर थे।' रूपक – 'मानस-सागर के तट पर।' अनुप्रास – 'करूणा कलित हृदय में।' विरोधाभास – 'शीतल–ज्वाला जलती है।' **शैली :** प्रसाद जी ने प्रबन्ध शैली एवं मुक्तक शैली – दोनों का अनुसरण किया है। कामायनी (महाकाव्य) प्रबंध शैली का उदाहरण है तो 'आँसू' व 'अशोक की चिंता' मुक्तक शैली में रचे गए हैं। 'आँसू' में क्रमबद्धता अवश्य है। प्रसाद जी के काव्य में बिम्ब विधान, अप्रस्तुत विधान, संगीतात्मकता, चित्रात्मकता आदि गुण भी पाए जाते हैं। प्रकृति चित्रण में वे सिद्धहस्त हैं। अथवा **<u>हजारी प्रसाद द्विवेदी</u>** **जीवन-परिचय :** आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में आरत दुबे का छपरा में 1907 ई. में हुआ। संस्कृत महाविद्यालय काशी से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने 1930 ई. ज्योतिष विषय में ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की। भारत सरकार की हिन्दी विषयक अनेक योजनाओं से संबद्ध रहे। लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी लिट् की उपाधि से और भारत सरकार ने पद्मभूषण अलंकार से सम्मानित किया। उनका निधन 19 मई 1979 को दिल्ली में हुआ। **साहित्यिक विशेषताएँ :** द्विवेदी जी का अध्ययन – क्षेत्र बहुत व्यापक था। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश बँगला आदी भाषाओं एवं इतिहास, दर्शन, संस्कृति, धर्म आदि विषयों में उनकी विशेष गति थी। वे परंपरा के साथ आधुनिक प्रगतिशील मूल्यों के समन्वय में विश्वास करते थे। **भाषा-शैली :** द्विवेदी जी की भाषा सरल होते हुए भी प्रांजल एवं प्रवाहयुक्त है तथ भाव व्यंजक भी। भाषा की दृष्टि से उन्होंने हिन्दी की गद्य शैली को जो रूप दिया, वह हिन्दी साहित्य के लिए वरदान है। **रचनाएँ :** हिन्दी निबंधकारों में आचार्य रामंचद्र के बाद द्विवेदी जी का प्रमुख स्थान है। वे उच्चकोटि कि निबंधकार, आलोचक और उपन्यासकार थे। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं – **निबंध संग्रह** – अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज, आलोक पर्व। **आलोचनात्मक रचनाएँ** – सूर–साहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कालिदास की लालित्य–योजना। **उपन्यास** – चारुचंद्रलेख, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा और अनामदास का पोथा। द्विवेदी जी की सभी रचनाएँ हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली के ग्यारह भागों में संकलित हैं।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	<u>**रामविलास शर्मा**</u> **जीवन-परिचय :** डॉ. रामविलास शर्मा का जन्म 10 अक्तूबर 1912 ई. को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के ऊँच गाँव में हुआ। आपने लखनऊ विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. करने के बाद पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की और वहीं अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हो गए। बाद में आप बलवंत राजपूत कॉलेज, आगरा में अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष नियुक्त हुए। सन् 1971 के बाद कुछ समय तक ये के.एम.मुंशी विद्यापीठ आगरा के निदेशक रहे। अंतिम वर्षों में इन्होंने दिल्ली में रहकर हिन्दी साहित्य, समाज और इतिहास से जुड़े विषयों में लेखन एवं चिंतन किया। सन् 2000 में दिल्ली में इनका निधन हो गया। **रचनाएँ :** रामविलास शर्मा जी मुख्यत: समीक्षक के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने समीक्षात्मक निबंध ही अधिक लिखे हैं। उनकी स्वतंत्र आलोचनात्मक कृतियों में (प्रेमचंद और उनका युग, निराला की साहित्य-साधना (तीन भाग),भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारतेंदु युग, और हिन्दी भाषा की विकास परंपरा, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, भाषा और समाज, भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी (तीन भाग) आदि उल्लेखनीय है। भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद (दो खंड) उनके इतिहास-बोध को प्रमाणित करती है। आत्मकथा शैली में 'घर की बात' उनकी एक अन्य महत्वपूर्ण रचना है जिसमें न केवल उनके परिवार और परिजनों का लगभग सौ वर्ष का इतिहास है, बल्कि इसे किसी सीमा तक उस अवधि का सामाजिक इतिहास भी कह सकते हैं। **साहित्यिक परिचय :** रामविलास शर्मा को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 'निराला की साहित्य-साधना' पुस्तक पर उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ। अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों में 'सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार' उत्तर प्रदेश सरकार का 'भारत भारती पुरस्कार' और हिन्दी अकादमी, दिल्ली का 'शलाका सम्मान' उल्लेखनीय है। **भाषा-शैली :** शर्मा जी की निंबध-शैली कहीं तो विचारोत्तेजक और कहीं व्यंग्य प्रधान है। स्पष्ट कथन के कारण उनकी शैली में कहीं कबीर जैसी ओजस्विता आ जाती है। अपने कथ्य को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने उसी के अनुकूल भाषा प्रयुक्त की है। उनको परहेज नहीं है। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, सहज, सरस एवं विषयानुकूल है।	
13	**किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** (3+3+3)	**9**
(क)	'सूरदास की झोपड़ी' पाठ प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास रंगभूमि का एक अंश है। इस उपन्यास का नायक सूरदास है। वह उपन्यास की ऐसी केन्द्रीय धुरी है, जिसके इर्द-गिर्द समस्त कथाचक्र घूमता है। सूरदास दृष्टिहीन एवं गरीब है। वह सारी जिंदगी भीख माँगकर अपना जीवन-यापन करता है। उसने लगभग 500 रुपये की पूँजी भी एकत्रित कर ली, जिसे वह पोटली में बाँधकर रखता था। सूरदास सहृदय व्यक्ति है। वह एक अनाथ बालक मिठुआ का पालन-पोषण करता है। जब भैंरो अपनी पत्नी सुभागी को मारता-पीटता है तब सूरदास उसे अपनी झोपड़ी में आश्रय देता है। उसकी इसी सहृदयता	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	का गलत अर्थ लगाया जाता है और उसकी झोपड़ी को आग लगा दी जाती है। सूरदास आत्मविश्वासी है। वह मिठुआ से कहता भी है – ''हम दूसरा घर बनाएँगे... सौ लाख बार बनाएँगे।'' सूरदास सहनशील व्यक्ति है। झोपड़ी में आग लग जाने से उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है, पर वह सारा नुकसान धैर्यपूर्वक सह जाता है। सूरदास भविष्य के प्रति आशावान बना रहता है। वह सब कुछ पुनः ठीक हो जाने की आशा बनाए रखता है।	
(ख)	सरकार कारखानों व उद्योगों को शहर से दूर खुली जगहों पर लगाए। गंगा, यमुना, गोमती आदि नदियों के जल को शुद्ध बनाए रखने के लिए कटिबद्ध रहे। किसी प्रकार का प्रदूषित जल व कचरा इन नदियों में नहीं जाना चाहिए। विभिन्न-स्थानों पर बड़े-बड़े यंत्र लगाकर जल को पीने योग्य बनाया जाना चाहिए। प्लास्टिक की थैलियों के प्रयोग पर कड़ाई से प्रतिबंध लगाना चाहिए। धरती के बढ़ते तापक्रम पर सरकार को सदैव सतर्क रहना होगा। सरकार को अधिकाधिक वृक्ष लगाने चाहिए तभी वातावरण को शुद्ध रखा जा सकता है।	
(ग)	'आरोहण' कहानी की मूल संवेदना पर्वतीय प्रदेश के लोगों की संघर्षमयी जटिल, दुखद ज़िंदगी को व्यक्त करना है यद्यपि भौतिक उन्नति अधिक हुई है लेकिन मैदानी इलाकों की तुलना में उन्हें दैनिक सुविधाएँ भी प्राप्त नहीं हैं। अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, महँगाई, आवागमन के साधनों का अभाव – इन समस्याओं के कारण उनका जीवन कष्टपूर्ण बीतता है। रोजगार का अभाव, भुखमरी, कृषि योग्य जमीन का न होना – ये स्थितियाँ बाल मजदूर पैदा करती हैं। 1986 में बालश्रम निषेध एवं नियमन कानून को सरकार द्वारा लागू किया गया था लेकिन फिर भी बाल मजदूरों की संख्या देश में बढ़ती ही जा रही है।	
(घ)	'बिस्कोहर की माटी' रचना विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा लिखित आत्मकथा 'नंगातलाई का एक गाँव' का अंश है। लेखन ने इसमें ग्रामवासियों की विषमताओं का वर्णन किया है। गाँव के लोगों के पास वे सुख-सुविधाएँ नहीं है जो शहर के लोगों के पास हैं, उन्हें अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है, जैसे – यातायात के साधनों की कमी, बिजली का पर्याप्त मात्रा में न मिलना, सिंचाई के साधनों का अभाव, अशिक्षा, रोजगार की कमी, भुखमरी, चिकित्सा, साधनों का समय पर न मिलना आदि। बाढ़, अकाल आदि विपत्तियों के समय उन्हें प्राकृतिक संपदा पर ही निर्भर रहना पड़ता है। गाँव में साँप, बिच्छू तथा अन्य हानिकारक जीव हरियाली के कारण पाए जाते हैं। कई लोगों की मृत्यु साँप के काटने के कारण हो जाती है लेकिन वे फिर भी गाँव में रहने व खेतों में काम के कारण इन खतरों का सामना करने के लिए विवश हैं। रोग की स्थिति में उन्हें गाँव में प्राप्त जड़ी-बूटियों से ही उपचार करना पड़ता है क्योंकि चिकित्सा संबंधी सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं। वर्षा के दिनों में पानी की निकासी का प्रबंध न होने से पानी एक ही जगह एकत्र हो जाता है जिससे बीमारियाँ फैल जाने का भय बना रहता है।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	शिक्षा के अभाव में ग्रामीण अंधविश्वासी हो जाते हैं। वे किसी भी प्राकृतिक विपदा, महामारी का संबंध भूत-प्रेतों से जोड़कर तांत्रिकों के चंगुल में फँस जाते हैं।	
14	**किसी एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है।**	
	पर्वतारोहण – पर्वतारोहण आज भी प्रासंगिक है, पर पर्वतों पर चढ़ने के लिए केवल निर्भीकता, परिश्रम और कष्ट झलने की क्षमता की ही आवश्यकता नहीं होती। वास्तव में पर्वतारोहण एक कला है।	6
	पुराने जमाने में लोग विशेष तैयारी या साज-सामान के बिना, केवल भक्तिभाव से देवी-देवताओं के पुण्यधाम, इन दुर्गम, चोटियों के दर्शन के लिए जाते रहे किंतु इस युग में अनेक संस्थाओं में पर्वतारोहणों की शिक्षा दी जाती है। वहाँ शिक्षार्थियों को बर्फीले पहाड़ों की परिस्थितियों और कठिनाइयों की जानकारी कराई जाती है। उन्हें नवीन उपकरणों की प्रयोग-विधि बताई जाती है। दार्जिलिंग का 'हिमालय पर्वतारोहण संस्थान' एक ऐसा ही आदर्श शिक्षा केन्द्र है।	
	पर्वतारोहण में सबसे उपयोगी उपकरण बर्फ काटने की कुल्हाड़ी अथवा हिम कुठार होता है। इसे आरोही की तीसरी टाँग ही समझना चाहिए। इसी के सहारे आरोही अपने को अचानक फिसल जाने से बचाता है। सपाट चढ़ाई पर इसे बर्फ में घुसाकर अपना संतुलन कायम रखता है। इसी से रास्ते की बर्फ काट-काट कर सीढ़ियाँ बनाई जाती हैं।	
	अथवा	
	विकास की औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता है। खाऊ-उजाडू सभ्यता ने पर्यावरण का विनाश किया है।	
	प्रकृति ने हमारे लिए स्वस्थ एवं सुखद आवरण का निर्माण किया था, परन्तु मनुष्य ने भौतिक सुखों की होड़ में उसे दूषित कर दिया है। वर्तमान समय में शहरी सभ्यता प्रदूषण की समस्या से घिरी हुई है। जैसे-जैसे वैज्ञानिक उपकरण बढते जा रहे हैं, वैसे-वैसे प्रदूषण का खतरा भी बढ़ता जा रहा है।	
	प्रदूषण के कारणों की खोज करने पर प्रतीत होता है कि अंधाधुंधा वृक्षों की कटाई जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि, उद्योगों का अनियमित फैलाव, चिमनियों से आबादी के मध्य धुआँ उगलना एवं यातायात के साधनों की अभूतपूर्व वृद्धि आदि ही इसके लिए जिम्मेदार हैं।	
	कारखानों का रासायनिक जल नदियों में डाल दिया जाता है। शहरों का गंदा पानी बिना साफ किए नदियों में मिला दिया जाता है। वाहन धुआँ छोड़ते हैं और वायुमण्डल को प्रदूषित करते हैं। इस प्रदूषण से अनेक बीमारियाँ पनपती हैं।	
	प्रदूषण कई प्रकार का होता है – (1) जल-प्रदूषण (2) वायु-प्रदूषण (3) भूमि-प्रदूषण (4) ध्वनि प्रदूषण।	
	जल मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता है। स्वच्छ जल निरापद पीने का पानी न मिलने के कारण अधिकांश लोग गंभीर रोगों का शिकार हो रहे हैं। जल-प्रदूषण के लिए अधिकतर कारखाने जिम्मेदार हैं।	

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	जल में अनेक विषाक्त तत्व मिलकर उसे अनुपयोगी बनाते हैं। शहरों के गंदे नाले भी नदियों में जाकर गिरते हैं। इससे उनका जल दूषित होता है। जल–प्रदूषण के कारण पेट के रोग बढ़ रहे हैं। वायु में भी प्रदूषण फैल रहा है। वाहनों द्वारा छोड़ गया धुआँ तथा कारखानों की चिमनियों से निकला धुआँ वातावरण को दूषित करता है। वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। वृक्ष ऑक्सीजन छोड़ते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं, अतः यह चक्र ठीक बना रहता है। वनों के संरक्षण एवं संवर्धन द्वारा वायु–प्रदूषण को रोका जा सकता है। वायु–प्रदूषण के कारण साँस के रोग बढ़ रहे हैं। ध्वनि–प्रदूषण भी शहरों में बढ़ता जा रहा है। बसों के हॉर्न तथा मशीनों के चलने से उठने वाली भारी कर्कश आवाज से यह प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इससे बहरेपन का खतरा बढ़ रहा है। इससे उच्च रक्तचाप, तेज सिर दर्द, अनिद्रा आदि रोग भी हो सकते हैं। इस पर काबू पाया जाना जरूरी है।	6

For Latest CBSE Sample Papers and Important Questions go to www.iCBSE.com